गावस्त्रैलोक्यमातरः
गोपाष्टमी, संवत्
५ नवम्बर १९८१
श्री काशी जीवदयाविस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला

# ९५ वाँ

# वार्षिक कार्य विवरण

संवत् २०३७-३८

ओम् ओतरिक्षेण सह वाजिनीवन् कर्की वत्सामिह रक्ष वाजिन् ।
अयं घासो अयं व्रज इह वत्सां न वध्नीमः ।
यथानाम व इश्महे स्वाहा ॥ अथर्व०, ४।८।३८

हे अप्सराओं से घिरे हुए सूर्य ! यहां के बछड़ों की रक्षा करो। उनका पोषण करके शक्तिशाली बनाओ। यह घास पुष्टिकर हो। यह गोष्ठ गायों से सम्पन्न हो। इसमें हम बछड़ों को बांधते हैं। तुम्हें हम इस गोष्ठ की रक्षा में नियुक्त करते हैं।

श्री काशी जीवदया-विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

---

गोपाष्टमी, संवत् २०३८ — ५ नवम्बर १९८१

---

प्रकाशक

पुरुषोत्तमदास मोदी

प्रधानमन्त्री

## शासक-मंडल संवत् २०३८-३९

| | |
|---|---|
| श्रीमान् महाराजा बहादुर भू० पू० काशीनरेश श्री विभूतिनारायण सिंह देव | संरक्षक |
| श्री राजकुमार साह | संरक्षक |
| श्री काशीप्रसाद अग्रवाल | सभापति |
| श्री ऋषीकेश सर्राफ | उप-सभापति |
| श्री मुरारीलाल केडिया | मन्त्री |
| श्री नन्दकिशोर प्रहलादका | उप-मन्त्री |
| श्री महावीरप्रसाद डिडवानिया | कोषाध्यक्ष |

### सदस्य

श्री रतनलाल सुरेका
श्री भीषमचन्द मूँदड़ा
श्री काशीनाथ चौधरी
श्री बृजमोहन केजरीवाल
श्री नन्दलाल जालान
श्री छेदीलाल लिल्हा
श्री कुञ्जबिहारी गुप्त
श्री आत्माराम ढाँढनिया
श्री प्रयागनारायण झुनझुनवाला

## प्रबन्धकारिणी समिति संवत् २०३८-३९

| | |
|---|---|
| श्री त्रिभुवननारायण सिंह | संरक्षक |
| श्री ब्रजपालदास | सभापति |
| श्री शंभूनाथ चौबे | उप-सभापति |
| श्री गोवर्धनलाल झँवर | उप-सभापति |
| श्री पुरुषोत्तमदास मोदी | प्रधानमन्त्री |
| श्री बलदेवदास गुजराती | उपमन्त्री |
| श्री रामकुमार रूँगटा | कृषिमन्त्री |
| श्री नारायणप्रसाद पसारी | कोषाध्यक्ष |

### सदस्य

श्री नरेन्द्र अग्रवाल
श्री अशोककुमार सराफ
श्री पूरनमल सराफ
श्री रामजीलाल अग्रवाल
श्री भगवानदास अग्रवाल
श्री राजकुमार लिल्हा
श्री अरुणकुमार
श्री राधेश्याम खेमका
श्री श्रीराम माहेश्वरी
श्री राजकृष्णदास
श्री नारायणप्रसाद साह
श्री जानकीवल्लभ करवा
श्री कैलाशनाथ चौधरी

आय-व्यय-निरीक्षक

**श्री घनश्यामदास एण्ड कं०, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट**

श्री काशी

जीवदया

विस्तारिणी

गोशाला

एवं

पशुशाला

का

९५ वाँ

# वार्षिक कार्य विवरण

या लक्ष्मीः सर्वभूतानां सर्वदेवेष्ववस्थिता ।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ।।
नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च ।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ।।

जो सब प्राणियों की लक्ष्मी है, जो सभी देवताओं में विद्यमान है, वह गौ-रूपिणी देवी हमारे पापों को दूर करे । लक्ष्मीरूपिणी गौओं को नमस्कार । सुरभि कामधेनु की सन्तानों को नमस्कार । ब्रह्मपुत्री गौओं को नमस्कार । सब प्रकार से पवित्र कर देनेवाली गौओं को बार-बार नमस्कार ।

माननीय सभापति जी,
मुख्य अतिथि जी एवं
उपस्थित गोप्रेमियो,

आज गोपाष्टमी के पावन पर्व पर मैं सर्वप्रथम गोपालक भगवान् श्रीकृष्ण के समक्ष नतमस्तक होता हूँ जिन्होंने मानव-जाति के सुख, समृद्धि तथा पोषण के लिए गोपरूप धारण कर जन-जीवन में कामधेनु-रूपी गो-माता की प्रतिष्ठा की ।

वर्षा ऋतु के समाप्त होते ही नदियाँ स्थिर होने लगीं । झरनों में संयम आया और प्रकृति में शीतलता व्याप्त होने लगी । गौओं के चरने के लिए कोमल दूर्वा विकसित हो रही है । गोवर्द्धन की पूजा के पश्चात् देवोत्थान एकादशी के पूर्व आज गोपाष्टमी पर नटनागर भगवान् श्रीकृष्ण ने गोचारण किया था । सर्वशक्तिमान्, परब्रह्म योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण ने गोचारण द्वारा कृषि, समृद्धि और गौ तीनों की प्रतिष्ठा की । गायों ने कृषि-कर्म के लिए बैल, खाद के लिए गोबर और पोषण के लिए दूध प्रदान कर देश में सुख-समृद्धि का मार्ग प्रशस्त किया । गोमाता हमारे धर्ममय जीवन का भी अंग है जिसमें कोटि-कोटि देवताओं का भी वास है ।

भूतभावन भगवान् शंकर की नगरी में यह गोशाला ९५ वर्ष पूर्व धर्मप्राण व्यक्तियों द्वारा स्थापित की गयी थी । आज ९६वें वर्ष में प्रवेश करते समय गोलोकवासी उन आत्माओं के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हुए मैं अपनी श्रद्धा

निवेदित करता हूँ। आज इस अवसर पर अत्यन्त भरे हृदय से यह स्वीकार करता हूँ कि जिन उद्देश्यों और आदर्शों के लिए इस गोशाला की स्थापना की गयी थी उनकी पूर्ति इस समय हम नहीं कर पा रहे हैं। इस भौतिक युग में आज सेवा और समर्पण इतिहास-मात्र रह गया है। आज पैसा ही सर्वोपरि है किन्तु पैसा सेवा को नहीं खरीद सकता। इसके लिए भावना की आवश्यकता है। आज यह भावना हमारे देश से लुप्तप्राय हो गयी है।

आप सबके सहयोग और शुभाकांक्षाओं से आशा है, उन पुण्यात्माओं ने जिन उद्देश्यों और आदर्शों के लिए इस गोशाला की स्थापना की थी उनकी पूर्ति में हम शनैः-शनैः अग्रसर होते रहेंगे।

जिस समय गोशाला की स्थापना की गयी थी उस समय लक्ष्य यह था कि गौओं की सेवा हो सके, उनकी रक्षा हो सके और वे अनुपयोगी होने पर वधशाला में न जा सकें। किन्तु आज गोशाला से तात्पर्य दुग्ध से होता है और यह समझा जाता है कि गोशाला में दूध बहुतायत से उपलब्ध होगा। किन्तु स्थिति विपरीत है। यहाँ उन गौओं की सेवा करनी पड़ती है जो सर्वथा अनुपयोगी अथवा आर्थिक दृष्टि से लाभदायक न होने पर गोपालकों द्वारा त्याग दी जाती हैं। ऐसी ही गायों की सेवा करने में गोशाला की बहुत बड़ी क्षमता लग जाती है।

गोवध न हो, इसके लिए अनेक आन्दोलन देश में किये जा रहे हैं किन्तु गोवध रोकने के लिए व्यावहारिक दिशा की ओर कोई कदम नहीं उठाया जा रहा है। जो गायें अनुपयोगी हैं आखिर वे कहाँ जायें। कलकत्ता वध हेतु जाने वाली गायों को विभिन्न स्थानों पर रोका जाता है, किन्तु रोककर होता क्या है, पोषण के अभाव में उनकी मृत्यु हो जाती है। जब तक इन नारों से ऊपर उठकर सेवा और समर्पण की कोई योजना नहीं बनेगी तब तक इस देश में गोवध बन्द नहीं हो सकता। गोवध-बन्दी अन्य राजनीतिक नारों की तरह नारा-मात्र रह जायेगा।

आज सेवा-समर्पण का स्थान राजनीति और सत्ता ने ले लिया है अतः सर्वत्र गो-वध बन्दी एक प्रकार की राजनीतिक माँग बन गयी है। जब तक इसका आर्थिक हल नहीं ढूँढ़ा जायेगा, गोवध बन्द नहीं हो सकता। किसी समय गोवंश के बिना कृषि-कर्म की कल्पना नहीं की जा सकती थी किन्तु आज यांत्रिक और कृत्रिम साधनों ने गोवंश की उपयोगिता समाप्त कर दी है। गोवंश की वृद्धि भी साँड़ से नहीं विदेशी जमाये गये वीर्य से की जाती है। विदेशों से आयातित पाउडर दूध बोतलों में दूध बनाकर दिया जाता है।

गोपाष्टमी के दिन कुछ गो-प्रेमी एकत्र होकर गो सेवा की बात कर लेते हैं किन्तु सेवाभावी और अपना समय लगा सकने वाले व्यक्तियों के अभाव में गोशाला का कार्य प्रगति नहीं कर पा रहा है। गतवर्ष गो-शाला के विकास के लिए सात लाख रुपये की योजना बनाई गयी, गो-विशेषज्ञ की नियुक्ति की गयी, किन्तु धन के अभाव में वह योजना आगे नहीं बढ़ सकी और गो-विशेषज्ञ की सेवा भी हम अधिक समय तक नहीं ले सके। गोशाला के पास कृषि योग्य बहुत बड़ी भूमि है, किन्तु साधनों के अभाव में हम अपेक्षित उत्पादन नहीं कर सके। इस दृष्टि से गोशाला ने बैंक से ऋण लेकर एक ट्रैक्टर खरीदा उससे खेती का विस्तार हो रहा है ताकि गौओं के लिए चारे तथा भूसे की दृष्टि से गोशाला आत्मनिर्भर हो सके। गोशाला के बावन बीघा फार्म पर कुँए तो बहुत हैं किन्तु बोरिंग न होने के कारण पर्याप्त पानी नहीं मिल पाता था अतः नगर के गण्यमान्य उदारमना उद्योगपति श्रीराजकुमार साह ने कृपापूर्वक बाबू जगमोहनदास साह चैरिटी ट्रस्ट से बारह हजार रुपये बोरिंग हेतु प्रदान किये। एक कुँए में बोरिंग सफल नहीं हुई। अतः दूसरे कुँए में बोरिंग हो रही है, आशा है बोरिंग सफल होगी। इस पुण्य कार्य के लिए हम सभी श्री राजकुमार साह के आभारी हैं। विश्वास है गोशाला को इसी प्रकार उनका सहयोग मिलता रहेगा।

गतवर्ष गोशाला के बावन बीघा स्थित ध्वस्त भवन की यथासम्भव मरम्मत करायी गई, कुछ लघु निर्माण कराये गये। श्रीरामकुमारजी रूँगटा ने ४ कमरों के एक छोटे भवन का निर्माण प्रारम्भ किया है जो आशा है, कुछ मास में पूरा हो जायेगा। इस भवन से बावन बीघा फार्म तथा गो सदन के कार्य में सुविधा होगी। यहीं पशु-चिकित्सालय भी खोलने की व्यवस्था की जा रही है। बावन बीघा फार्म पर ही वानिकी वन-विभाग के सहयोग से वृक्षों की नर्सरी लगायी गई है और सड़क की ओर तथा फार्म की सीमा पर यूकिलिप्टस तथा गुलमोहर के सैकड़ों वृक्ष लगाये जा रहे हैं। पहले के वृक्षों में सुधार के लिए पेड़ के चारों तरफ गड्ढे खोदकर मिट्टी चढ़ा दी गयी है। पुराने कुँओं की सफाई कराई गयी है ताकि पानी अधिक मिल सके।

ट्रैक्टर का उपयोग परती पड़ी भूमि को उपजाऊ बनाने में किया गया है।

रामेश्वर में गोशाला की लगभग तीन सौ बीघा भूमि है जिसमें अधिकांश बंजर हैं जिसे उपजाऊ बनाया जा सकता था। साधनों के अभाव में सम्भव नहीं हो पा रहा था। किन्तु अब ट्रैक्टर से अधिकाधिक भूमि उपजाऊ बनायी जा रही है। ट्यूबवेल का प्रबन्ध होने पर रामेश्वर में इतना चारा उत्पन्न हो सकेगा कि वहाँ लगभग दो सौ गायें रखी जा सकेंगीं।

आज गोशाला को अपने साधनों से आत्मनिर्भर बनाने की अपेक्षा है। इसके लिए आरम्भ में भारी धन की आवश्यकता है ताकि आधुनिक साधनों से सम्पन्न कर गोशाला की निजी आय में वृद्धि की जा सके और बढ़ती हुई महँगाई का सामना किया जा सके।

पशु आहार, वेतन, कृषि व्यय आदि सभी में निरन्तर वृद्धि हो रही है। इस मुद्रा स्फीति का सामना करना एक समस्या हो गयी है। दानदाता द्वारा निर्धारित दान में वृद्धि नहीं हो रही है, जिससे कठिनाई निरन्तर बढ़ती जा रही है। रोजगार-व्यापार से गोशाला को होने वाली आय भी सरकारी नियन्त्रण के कारण घटती जा रही है। केवल साड़ी व्यवसाय पर सरकारी अंकुश नहीं है यदि साड़ी व्यवसाय गोशाला को प्रति साड़ी दस पैसे भी दे तो गोशाला उस सहायता से अपना विकास कर सकती है। काशी का साड़ी उद्योग विकास की ओर अग्रसर है। इस उद्योग से अनुरोध है कि गोशाला की नियमित सहायता कर गोशाला के विकास में सहायक हो।

आशा है, भगवान् शंकर की नगरी काशी के श्रद्धालु जन अपने कर्तव्य का अनुभव करेंगे और गोपाष्टमी ऐसे पवित्र दिन पर वर्ष भर का लेखा-जोखा जोड़कर काशी की इस गोशाला को अपना अनुदान प्रदान करेंगे।

आज मैं उन व्यावसायिक प्रतिष्ठानों और बन्धुओं के प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जो नियमित रूप से इस गोशाला को व्यापार कटौती के रूप में अनुदान प्रदान करते रहे हैं इनमें सर्वश्री आत्माराम अनन्तप्रसाद, शिवनारायण शम्भुनारायण, श्री किशनलाल रिषीकेश, तथा श्रीराम वृजेशकुमार प्रमुख हैं। गोयनका माँजी (श्रीमती केशर देवी) जो काशी में धार्मिक जीवन व्यतीत कर रही हैं प्रतिमास गोशाला को अनुदान प्रदान करती हैं। आशा है, अन्य संस्थान तथा महानुभाव भी इन का अनुगमन करेंगे।

गोशाला के संचालन में मुझे शासक-मण्डल और प्रबन्ध-समिति के समस्त सदस्यों और गोशाला के कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त होता रहा है। मैं इन सबके प्रति आभार निवेदित करता हूँ। शासक-मण्डल के अध्यक्ष श्री काशीप्रसादजी अग्रवाल, मन्त्री श्री काशीनाथजी चौधरी, प्रबन्ध समिति के संरक्षक रामेश्वरलालजी नोपानी तथा अध्यक्ष श्री व्रजपालदासजी का समय-समय पर मुझे मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है। श्री मुरारीलालजी केडिया के सहयोग के बिना मेरे लिए गोशाला चला सकना एक दिन के लिए भी सम्भव नहीं होता। जब कभी गोशाला पर आर्थिक संकट आया है, केडियाजी ने ही आगे बढ़कर इसे संकट से उबारा है। प्रबन्ध समिति के संरक्षक श्री रामेश्वरलाल नोपानी हमारे बीच नहीं रहे। उनका अभाव हमें सदा खटकता रहेगा। गोशाला को जनोपयोगी बनाने की दिशा में वे प्रयत्नशील थे, उनके निधन से एक सच्चा गोसेवी और काशी गोशाला का पुनरुद्धारक चला गया। अपने अन्य सहयोगी श्री बलदेवदास गुजराती उप-मन्त्री, श्री अशोककुमार सराफ कृषिमन्त्री और श्री नारायणप्रसाद पसारी, कोषाध्यक्ष, का भी मैं विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने पूरी निष्ठा से मुझे सहयोग प्रदान किया। इस कार्य में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जिनका भी मुझे सहयोग प्राप्त हुआ है, मैं उन सबके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

गोमाता की जय !

**पुरुषोत्तमदास मोदी**
प्रधानमन्त्री

## श्री काशी जीवदया-विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

गोपालकों को निम्नलिखित सेवाएँ उपलब्ध कराती है :—

१. गायों का गर्भाधान।

२. गाय, भैंस का गर्भ-परीक्षण—गर्भाधान के दो मास बाद निश्चित रूप से पशुपालकों को बता दिया जाता है कि उनकी गाय-भैंस गाभिन है या नहीं।

३. गर्भवती गाय-भैंस की देख-भाल एवं पोषण-सम्बन्धी परामर्श।

४. गरम न होनेवाली या गर्भधारण न करनेवाली गाय, बछिया, भैंस आदि का परीक्षण एवं उपचार।

५. गाय तथा उसके वंशजों को खुराकी पर गोशाला में पालन-पोषण की व्यवस्था। जब चाहे पशुपालक अपना पशु वापस ले जा सकते हैं।

६. अनुपयोगी, वृद्ध गाय एवं उसके वंशजों के पालने की जिम्मेदारी।

७. संक्रामक रोगों तथा गलाघोंटू, रिण्डरपेस्ट, खुर-पका, मुँह-पका आदि से बचाव की सुई लगवाने की व्यवस्था।

८. पशुओं की चिकित्सा।

९. प्रत्येक मास की १५ तारीख को नगर के गोशाला केन्द्र में बाँझपन पशुशिविर लगाया जाता है जिसमें जिले के चार प्रमुख पशु-चिकित्सक पशुओं का गर्भ-परीक्षण और चिकित्सा करते हैं। गोशाला के बावनबीघा तथा रामेश्वर केन्द्रों पर भी यह योजना शीघ्र कार्यान्वित होने जा रही है। वहां गर्भाधान के लिए अच्छी नस्लके सांड और फ्रोजेन सीमेन की व्यवस्था की जा रही है।

कृपया इस धार्मिक सेवा-संस्था के कार्य-कलाप में रुचि लें और इसके सेवा-कार्य में अपना बहुमूल्य योगदान दें।

●
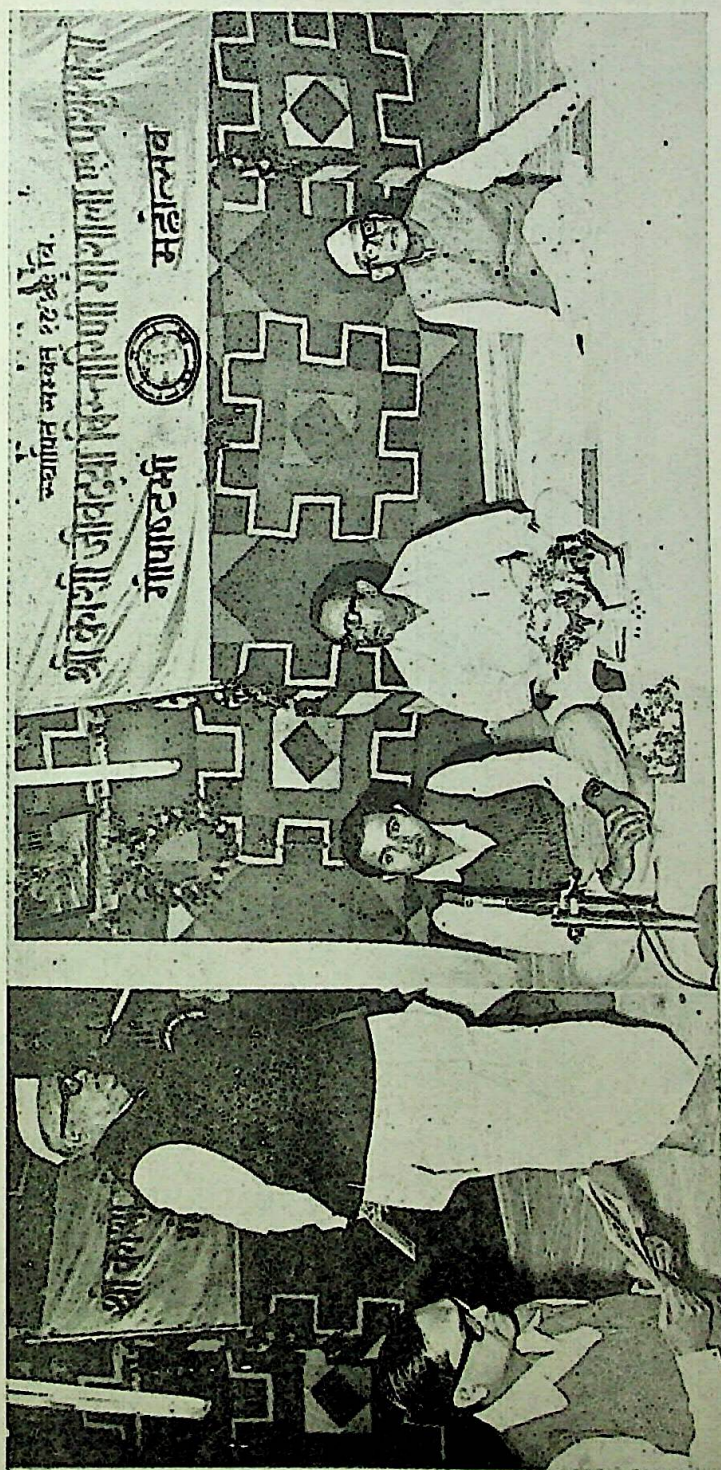
**१५ नवम्बर १९८० ई० को आयोजित गोपाष्टमी समारोह**

मन्त्री पुरुषोत्तमदास मोदी, प्रबन्ध-समिति के अध्यक्ष श्री व्रजपालदास, उपनिदेशक, पशुपालन श्री ए. के. सिंह, उपप्रशासक महापालिका श्री रमारत्न शुक्ल तथा शासक-मण्डल के अध्यक्ष श्री काशीप्रसाद अग्रवाल

# गौ भारत-राष्ट्र की धात्री—कामधेनु

— डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल

वेदों में भूमि पर आश्रित जीवन की जो कल्पनाएँ हैं, उनमें सम्भवतः सबसे अधिक सुन्दर, सत्य, सरस और उपयोगी यह हैं—

साहस्रो वा एष शतधार उत्सो यद् गौः ( शतपथ—७-५-२-३४ )—सहस्र गुना महान्, सौ धाराओं वाला यह झरना है, जो गौ है। सचमुच इस देश की भूमि में प्रकृति ने गौ के रूप में सैकड़ों धाराओं वाला बड़ा झरना ही खोल दिया है। यह झरना साहस्र है। वेद की भाषा में जो अपरिमित होता है जिसकी इयत्ता नहीं, जो महान् से महान् है उसे साहस्र कहते हैं। यह विशेषण स्वयं सृष्टिकर्ता के लिए आता है। उसी का कवि ने गौ के लिये प्रयोग किया है। गौ रूपी झरना साहस्र क्यों है? इसलिए कि वह कभी छीजता नहीं। और झरनों में जल घटता-बढ़ता है, वे परिमित हैं, जैसे प्राकृतिक कारणों से बन गये हैं वैसे चलते रहते हैं। पर गौ का झरना कितना बढ़ सकता है इसकी हद नहीं है। पहाड़ी झरने और जलधाराएँ एकदेशीय हैं, जहाँ हैं वहीं उनका उपयोग है। पर गौ का झरना सारे देश में गाँव-गाँव में, घर-घर में, खूंटे-खूंटे पर इच्छानुसार बाँधा जा सकता है, जिसके ऊपर चाहो उस झरने की दूधिया धार छोड़ दो, जिस घर को चाहो इस विशाल झरने से भर दो। शतपथ ब्राह्मण ने गौ की जो परिभाषा ऊपर बाँधी है उसका मूल यजुर्वेद में है, जहाँ कहा है—

यह झरना सौ धाराओं वाला है। यह झरना सहस्र गुणित ( साहस्र ) है। यह झरना जल के बीच में से झर कर उसे दूध बना रहा है। यह झरना अदिति रूप है। इस झरने से जनता के लिए घी दुहा जाता है।

हे बुद्धियुक्त प्राणी, तुम्हारे जीवन के जो ऊँचे स्रोत हैं, वहाँ तक पहुँचो और इस झरने की हिंसा मत होने दो।

गौ के चार थनों में मानों चार समुद्र ही समा गये हों। उसकी सुधाधारिणी धार एक होते हुए भी सौ गुनी है। उसी से दूध, दही, साढ़ी, मठ्ठा, लौनी, घी, खोया, छाछ, लस्सी, पनीर, क्या नहीं होता? गौ की संख्या वृद्धि ज्यामिति वर्ग की तरह दुगुने, चौगुने, सोलह गुने प्रमाण से बढ़ती है। अतएव वह सचमुच सहस्र गुणित या अपरिमित है। पानी को दूध बनाने की शक्ति गौ के झरने में ही है। धरती पर मेघों ने जो घास-तिनके उपजाये हैं, उन्हें खाकर गौ इस दूध के झरने को उत्पन्न करती है। जनों के लिए घी की धार के फव्वारे इसी स्रोत से फूटते हैं। ( छूटते हैं )

भारत की स्वराज्यमयी भूमि पर आज क्या चाहिए?

गावः सन्तु प्रजाः सन्त्वथो अस्तु तनू बलम्! ( अथर्व—९-४-२० ) 'गौएँ चाहिए और शरीर-बल से बलिष्ठ प्रजाएँ चाहिए। आज इस भूमि पर नित्य बछड़ा चुसाने वाली, दुहने में सहज गौएँ चाहिए—

अयं धेनुं सुदुघां नित्यवत्सांवशंदुहां (अथर्व—९-४-२१) गौ और हमारे जनपद जन का सम्बन्ध बहुत पुराना है। गौ के रूप रंग, स्वभाव और शरीर गठन का सूक्ष्म अध्ययन यहाँ किया गया। हमारी बोलियाँ उनका वर्णन करने वाले शब्दों से भरी हुई हैं। अनेक शब्द संस्कृत से निकले हैं, कुछ ठेठ बोलियाँ में जन्मे हैं। अथर्ववेद का नित्यवत्सा शब्द ऊपर आया है। नित्य-वत्सा वह गाय है, जो सदा बछड़ेवाली रहे जो एक ब्यान से लेकर दूसरे ब्यान तक बराबर दूध देती रहे, जिसके नीचे बछड़ा हमेशा चूसता रहे। पाणिनि ने ऐसी गाय को 'महागृष्टि' कहा है। पहली बार ब्यायी हुई पहलब्यान गाय गृष्टि हुई। वह यदि दूसरी ब्यान तक बराबर दूध देती चली जाय, तो उसे 'महागृष्टि' कहा जायगा। ऐसी गाय के लिए सूरदास ने ब्रजभाषा के भण्डार में से

'नैचिकी' शब्द का प्रयोग किया है। नित्य-वत्सा की ही संज्ञा नैत्यिकी है, अर्थात् जो नित्य दूध देती हो। नैत्यिकी-नैच्चिकी-नैचिकी-नैचकी-यह विकास क्रम है। हेमचन्द्र के अनुसार नैचिकी गाय सब गायों में बढ़िया मानी गई है। ( नैचिकी तूत्तमा गोबू, अभिधान चिन्तामणि ) नैचकी गाय बरस-बियावर होती है। बरस-बरस पर बियाने वाली गाय के लिए पाणिनि का सरस सूत्र है, 'समां-समां विजायते' जिसके अनुसार ऐसी गाय पुराने समय में 'समांसमीना' कहलाती थी। पंतजलि ने लिखा है कि, जो साल-साल पर बियाती हो, वह अच्छी गाय है, पर जो बरस-बियावर होते हुए हरबार बछिया दे वह गाय और भी बढ़िया हुई—

गौरियं या समां समां विजायते। गोतरेयं या समां समां विजायते स्त्रीवत्सा च। ( भाष्य—५-३-५५ )

गौ आज तक हमारी बोलियों में सोधेपन का उपमान है। 'गौ हैं', यह बड़ा सार्थक वाक्य है। दुहने में जो भली मानस हो वह सहेज कहलाती है। वेद में उसे सुदुधा कहा है। पृथ्वी की प्रशंसा में एक जगह कहा गया है कि, वह हमारे लिए धन-समृद्धि की हजार-हजार धाराएँ ऐसे देती रहे जैसे अचल भाव से बिना फड़फड़ाने वाली गाय—

ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती।

गायों में कपिला गाय सबसे सीधी और निरीह मानी गयी है। कपिला वह गाय है जिसके सींग कानों के बराबर नीचे को मुड़े रहते हैं और डुगडुग हिलते हैं।

बैल भारतीय किसान के जन्म के साथी और सखा रहे हैं। किसान के जीवन की गाड़ी खींचनेवाला बैल किसान के लिए ऐसा ही है, जैसा देह के लिए प्राण। आषाढ़ की जुताई के समय काम की मारा-मारी रहती है। उस गाढ़े समय में दो ही प्राणी हिम्मत नहीं हारते या तो दधिचि की हड्डी से बने किसान या उनके दृढ़ बैल। उस समय बैल की कमाई से कृतज्ञ किसान का हृदय कह उठता है—"भैया, गाय के जाये कू बड़ी खुदाई है।" कराल हल जब खड़े हुए चलते हैं, तब बैलों पर भारी जोर पड़ता है, पर फिर भी खेतों में खूंड खींचकर हलाई भरते हुए उनका पौरुष नहीं थकता। ऐसे ही माह-पूस के जाड़ों में 'चरसिये' और 'कौलिये' किसान बैलों के बल-बूते पर कुओं को खेतों में उलीचकर रख देते हैं।

गौ के प्रति देश के प्राचीन भावों को फिर हमें प्राप्त करना है। गौ के शतधार झरने को राष्ट्र के नवोदय में सहस्रधार बनाना होगा। कहते हैं, वेदों में बहुत ऊँचा ज्ञान है. हो सकता है। पर उस साहित्य में से जीवन के लिए आवश्यक यदि कुछ चुनना हो, तो एक सूक्त लेकर हम सन्तोष करेंगे जिसमें भारतीय घरों की अधिष्ठात्री शाला देवी का ही रूप खड़ा किया गया है—हे, गृहदेवी, जिस नींव पर तुम टिकी हो, वह घी से सींची गयी है। उसी में क्षेम भरा है। तुम्हारे उस रूप में बीरों का निवास हैं, जिनके शरीर कभी रिसते नहीं। हे शाला, तुम गोमती हो, गोधन पर तुम टिकी हो, घी-दूध की सबल धार तुम्हारे मंगल द्वार में प्रवेश करती है। तुम वह कोठार हो जिसकी छत ऊँची है और जिसमें फटका-पछोरा अन्न भरा है। हे, देवी शाला, जिस दिन यहाँ छोटा कुमार आए, उसी दिन उसका भाई कूदता हुआ बछड़ा भी आये और उसके साथ आये संझा को पन्हायी हुई दुधार धेनु। हवा, पानी, धूप, गर्मी, अपना-अपना चक्कर चलाती हुई इस घर के जीवन को ठीक रखती हैं। हवाओं में जो गीलापन है वह घी बनकर इसमें बरसता है और हमारी खेतिहर भूमि, सब तरह के धान्य से लहलहा उठती है।

हाँ, इस घर में हमारा तरुण कुमार गाय के बछड़े के साथ आयेगा और फेनिल दूध से भरे गगरे, दही के कलशों के साथ आयेंगे। हे देवि, घी का पूर्ण कुम्भ यहाँ भर दो जिसमें अमृत की धार मिली हो। फिर घी का माट पीने वालों के शरीर पर अमृत का पुचारा फेर दो। यक्ष्मा का नाश करनेवाले अमृत को हमारे इन घड़ों में पूरा ही उड़ेल दो।

इस गान के सुर में घी-दूध की लय है। जिन फूस के छप्परों में ढाई सौ पीढ़ी सौ-सौ वर्ष तक जीवित रही, वे क्षीरगंगा के तट पर बने थे, उनमें मनुष्य के तरुण कुमारों के साथ गायों के कलोर बछड़े भी जीवन के नव मंगल में साझीदार थे। उनमें फेनिल दूध के माट और दही के हंडे गृहस्थ की बहँगी में एक साथ लदते थे। पुर और जनपदों में पनपनेवाले भारतीय जीवन के ये सच्चे मित्र थे। उनमें गौ का शतधार झरना झरता था। आज गौ रूपी दूधिया झरने की घर-घर बाट देखी जा रही है।

# गाय कैसे बचेगी ?

— स्व. कमलनयन बजाज

गाय धार्मिक भावना से, और भारत के आर्थिक जीवन में भी इस तरह से ओत-प्रोत है कि उसका ह्रास होना भारत में मानवीय जीवन का ही ह्रास होने के बराबर है। इस सवाल को केवल धर्म-संस्कृति और भावना मात्र से नहीं देखा जा सकता। न केवल विज्ञान या आर्थिक स्थिति के आधार पर ही इसका हल निकाला जा सकता है। विज्ञान, व्यवहार और धर्म को मिलाकर हमें इस प्रश्न पर सोचना होगा और उसका हल निकालना होगा।

जीवनमात्र की रक्षा करने का अधिकार सिर्फ परमात्मा का ही है। यह उसकी परम दया है कि यह शक्ति उसने मानव को नहीं दी। इसलिए किसी जीव की या गाय की रक्षा करना हमारे दायरे के परे है, वह निरा अहंकार है। गाय हमारी सेवा करती है उसके बदले में हम सेवा करें इतना ही हो सकता है। पर वह भी हम कहाँ कर रहे हैं ?

जब बापूजी ने मेरे स्वर्गीय पिताजी (जमनालालजी बजाज) को गाय के काम की जिम्मेदारी सौंपी तब उन्होंने परम्परागत गोरक्षा शब्द को न लेकर उत्कट विचार से गोसेवा शब्द बनाया। विनोबाजी ने कहा है 'पाश्चात्य समाजवाद से भारतीय समाजवाद आगे बढ़ा हुआ है। पाश्चात्य समाजवाद मानव तक ही अपने विचारों को ले गया और वह भी 'बहुजन हिताय' तक ही अपने कार्यक्रम को निहित कर सका तथा उसकी पूर्ति के लिए हिंसा को लाचारी की अवस्था में कबूल किया है। भारत के मनीषियों ने 'बहुजन हिताय' के बदले 'सर्वजन हिताय' और वह भी "अहिंसा द्वारा ही विश्वकुटुम्ब की भावना" हजारों वर्ष पहले दी। जीवमात्र की रक्षा का विचार उन्हें आया। सब प्राणियों की रक्षा करना असम्भव देखकर सर्वाधिक सेवा देनेवाली गाय को उनका प्रतिनिधि मानकर अपने परिवार में स्थान दिया। इतना ही नहीं माँ कहकर उसके प्रति अपनी कृतज्ञता भी निहित की।

विदेशी साम्राज्यों द्वारा की हुई लूट और बढ़ती हुई आबादी से दरिद्रता ने हमें आ घेरा। इसलिए हम गाय को नहीं सँभाल सके। गाय की हानि के साथ हमारी भी हानि हुई।

एक पाश्चात्य दार्शनिक ने कहा है "Man has civilised the Cow" (इन्सान ने गाय को सभ्य बनाया) उसके जवाब में भारत के दार्शनिक ने कहा 'Cow has civilised the man' (गाय ने इन्सान को सभ्य बनाया)। जिस दिन से गायों का पालना शुरू हुआ तब से भटकनेवाले आदमी को जगह-जगह ठहरना पड़ा, उसी में से कृषि का जन्म हुआ और आज की मानवसभ्यता विकसित हुई।

लेकिन गाय कमजोर और बेकार होती जा रही है। इसकी जिम्मेदारी गाय के बदले मनुष्य पर है। हमको यह सोचना होगा कि गाय नहीं रही तो हम रह सकेंगे या नहीं ? केवल भौतिक विकास से हमारी संस्कृति, धर्म बच सकेंगे क्या ? गाय का वध बन्द हो, यह नारा लग रहा है। लेकिन सिर्फ गाय का वध बन्द कराने से वह नहीं बचेगी। उसकी परवरिश करनी होगी। सिर्फ 'एजीटेशन' और 'लेजिस्लेशन' से वह नहीं बचेगी।

गोवध बन्द होने से बूढ़ी, सूखी, लूली, लँगड़ी, गायों का बोझ समाज पर अधिक पड़ सकता है। विशेषज्ञ कहते हैं कि इस बोझ के कारण गोवंश की उन्नति के बदले उलटे ह्रास होगा। उनके इस कथन में तथ्य भी हो सकता है। फिर भी मैं गोवध बन्दी के पक्ष में हूँ। वह इसलिए भी कि गोवध चालू रहा तो हमारी नई पीढ़ी में गाय के प्रति हमारी जो भावना है वह भी मरती जाएगी। गाय को

[ शेष पृष्ठ १७ पर ]

# ऊर्जा संकट और पशु शक्ति

— उमाकान्त वर्मा

बड़े पैमाने पर तेल उत्पादन तथा जल और कोयला से तैयार की जा रही विद्युत् के बावजूद आज विश्व ऊर्जा-संकट का प्रत्यक्ष अनुभव कर रहा है। विकसित और विकासशील दोनों संघ के देश अब यही चाहते हैं कि जल्द से जल्द ऊर्जा का ऐसा नया माध्यम प्राप्त हो जाय जिससे न सिर्फ पारम्परिक संसाधनों से मुक्ति मिले बल्कि सस्ता और सर्वसुलभ होने से उसके उपयोग में सुविधा भी रहे। इस सिलसिले में अब तक कई विकल्प सुझाये गये हैं। लगभग हर देश ने इन नये विकल्पों में से किसी न किसी पर अपने-हिसाब से प्रयोग भी किया है। हर परीक्षण में कुछ न कुछ खामी (अपनी सुविधा को ध्यान में रखकर) किसी न किसी देश को जरूर मिली। अतः अबतक कोई सर्वमान्य विकल्प नहीं ढूँढ़ा जा सका है।

## खोदा पहाड़ निकली चुहिया

ऊर्जा के बढ़ते संकट का सामना करने के लिए हाल ही में संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्त्वावधान में एक विश्व गोष्ठी नैरोबी में आयोजित हुई। विश्व समुदाय के सभी सदस्यों ने इसमें इस आशा से भाग लिया कि जरूर ही कुछ न कुछ ठोस परिणाम प्राप्त होंगे। पर २१ अगस्त को समाप्त हुई ग्यारह दिन तक चलनेवाली इस गोष्ठी के अन्तिम परिणाम पर टिप्पणी करते हुए एक भारतीय पत्रकार ने लिखा—'खोदा पहाड़ निकली चुहिया। विश्व संस्था को कुल खर्च, इस आयोजन में, ५६० लाख डालर का पड़ा। पर लाभ एक भी रुपये का नहीं हुआ।' कारण चाहे जो हो, लेकिन यह सत्य है कि अभी हम उस मोड़ तक नहीं पहुँचे हैं जहाँ से ऊर्जा के सर्वमान्य विकल्प को तुरन्त खोज निकाला जाए।

यहाँ यह बात ध्यान देने की है कि ऊर्जा शब्द वास्तव में एक भ्रमजाल है। इसका कोई एक विकल्प तो हो ही नहीं सकता, क्योंकि ऊर्जा (शक्ति) विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होती है और ये स्रोत मनुष्यजन्य भी हैं, प्रकृतिजन्य भी। अतः विकल्प खोजने को बजाय हमें ध्यान इस बात पर देना है कि विभिन्न प्राप्त स्रोतों में से अधिकतम किसका उपयोग किया जा सकता है (क्योंकि उपयोग की बात अपहृत आर्थिक संसाधन को ध्यान में रखकर ही की जाती है) तथा उसके लिए या उसके नजदीकी अन्य दूसरे स्रोतों के लिए उचित स्थानापन्न अन्य स्रोत क्या हो सकता है?

अबतक हमने ऊर्जा के मुख्य स्रोत के रूप में तेल, कोयला और बिजली का उपयोग किया है और कर भी रहे हैं। इसमें भी तेल और उससे साफ कर निकाले गये उपयोगी अन्य पदार्थ (विशेषकर डीजल और पेट्रोल) ही जीवन की बड़ी आवश्यकता आज पूरी कर रहे हैं। तेल उत्पादक देश विशेषकर अफ्रीका के मुसलमान देश इस तथ्य से भली भाँति अवगत हैं और इसका फायदा वे बराबर खनिज तेल की मूल्य-वृद्धि करने में ले रहे हैं।

बराबर हो रही इस आवश्यक वस्तु की मूल्यवृद्धि ने सारे संसार को एकदम झकझोर दिया है तथा इसी कारण अब यह बात जोर पकड़ रही है कि तेल का विकल्प (सर्व-सुलभ और आर्थिक दृष्टि से सस्ता) जल्द से जल्द खोजा जाए। भारत में भी यह प्रयास तेजी से चल रहा है क्योंकि हम बड़ी मात्रा में तेल का आयात करते हैं। भारतीय वैज्ञानिकों ने कई उपाय सुझाये हैं जिनपर परीक्षण भी चल रहा है पर वे तेल के मुकाबले बहुत सस्ते नहीं हैं। कुछ अन्य मामलों में तो इतनी ऊर्जा भी अन्य दूसरे स्रोतों से प्राप्त नहीं हो सकी है जितनी कि तेल से। योजना-विशेषज्ञ भी इसी कारण बराबर परेशान हैं। इधर योजना आयोग ने एक समिति ही इसलिए बनायी है कि वह आवश्यक सुझाव

दें कि सातवीं पंचवर्षीय योजना के लिए अनुमित अतिरिक्त तीस हजार मेगावाट बिजली प्राप्त करने के लिए किस स्रोत का सहारा लिया जाय।

## पशुधन का उपयोग

गैर-सरकारी स्तर पर भी इस विषय में विचार चल रहा है। महात्मा गान्धी द्वारा चालीस वर्ष पूर्व स्थापित 'अखिल भारतीय कृषि गो सेवा समिति' ने भी इस विषय में पहल की है तथा इस बात पर जोर दिया है कि यदि हम देश भर में फैले पशुधन पर उचित ध्यान दें तो हमारी समस्या बहुत कुछ हल हो सकती है। समिति ने यह राय उस अध्ययन दल के निष्कर्षों पर जाहिर की है, जिसे उसने कुछ समय पूर्व, मध्यप्रदेश शासन के भूतपूर्व पशुपालन-निदेशक श्री एम. वाई. गुरुगुलकर के नेतृत्व में भारत में विदेशी कृत्रिम नस्ल के पशुओं के बारे में अध्ययन करने के लिए नियुक्त किया था।

डाक्टर गुरुगुलकर के नेतृत्व वाली इस समिति ने इस बात पर खेद व्यक्त किया है कि योजनाकार अज्ञानवश देशी सुलभ पशु सम्पदा को पुष्ट बनाने के बजाय इसकी कृत्रिम विदेशी नस्ल तैयार कराने पर ही जोर दे रहे हैं। इसने अपने अध्ययन में यह पाया है कि विदेशी वीर्य से उत्पन्न बैल और साँड़ हमारे यहाँ की जलवायु के उपयुक्त नहीं हैं तथा वे खेतों में उतना परिश्रम भी नहीं कर सकते जितना कि देशी। इस समिति ने इसके बाद और दूसरे पहलुओं (विशेषकर दुग्ध तथा मांस-उत्पादन की ओर) पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है परन्तु ऊर्जा संकट पर भी कुछ बातें जोड़ी हैं।

इस अध्ययन दल ने यह सुझाव दिया है कि पशुओं से यदि पूरा-पूरा काम लें तो विदेशी तेल पर आश्रित होने की बात हमारे लिए नहीं रहेगी। आज उचित संरक्षण के अभाव में पुष्ट, मजबूत और हमारी जलवायु के अनुरूप देशी बैलों की तादाद काफी घटी है तथा ये सामान्य कृषक की पहुँच के बाहर हो गयी है। आजकल बैल दो हजार रुपये से लेकर चार हजार रुपये के बीच हैं। ऐसी स्थिति में कृषि कार्य के लिए या तो तेल पर आधारित ट्रैक्टरों का सहारा लेना पड़ रहा है या फिर कमजोर मामूली बैलों का जो उतनी मेहनत से खेत नहीं जोत सकते जितनी कि अच्छे और मजबूत बैल। परिणाम है सामान्य कृषक के लिए अतिरिक्त बोझ। इसका सीधा असर राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था पर पड़ रहा है।

कृषि में बार-बार मानव शक्ति के अतिरिक्त अन्य शक्ति की भी जरूरत पड़ती है। ऐसे में यदि पशु शक्ति पर ध्यान केन्द्रित किया जाय और उनका अधिकाधिक उपयोग हो तो कई अनावश्यक परेशानियों से त्राण पाया जा सकता है।

कृषि के अलावा यातायात पर भी आयातित तेल का बड़ा भाग खर्च होता है। बराबर तेल की मूल्यवृद्धि से भाड़ों में भी वृद्धि होती जाती है और परिणाम है—मूल्य-वृद्धि का सतत चलता चक्र। इस प्रश्न पर बराबर विचार किया गया है। बंगलोर के भारतीय प्रबन्ध संस्थान ने कई पहलुओं पर विचार करके यह सुझाव दिया है कि माल ढुलाई में बैल द्वारा खींची जानेवाली गाड़ियों का उपयोग कुछ सुधारों के बाद यदि किया जाय तो यह तेल बचाने के मामले में एक क्रान्तिकारी कदम होगा। बाद में संस्थान ने ही अपने यहाँ शोध कर गाड़ियों के पहिये तथा धुरे में परिवर्तन किया और उनमें टायर का प्रयोग किया। इसकी वजह से वह गाड़ी परम्परागत गाड़ी से तेज चल सकी तथा इसमें माल भी ज्यादा ढोया गया और बैलों की शक्ति का भी अपेक्षाकृत कम क्षरण हुआ। उस समय यह चर्चा जोरों पर थी कि इसका उपयोग अब बड़े पैमाने पर होगा लेकिन इस समय ऐसी कोई बात सुनायी नहीं पड़ती।

पशु-शक्ति पर आधारित होने से सबसे बड़ा फायदा हमें यह होगा कि अर्थ-व्यवस्था के प्रतिकूल सिद्ध हो रहे व्ययों को आसानी से रोका जा सकता है। साथ ही बहुत बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर भी सुलभ होंगे जो कि वर्तमान अवस्था में हमारी अर्थव्यवस्था के लिए बहुत जरूरी हैं। यह काम हमारे यहाँ इसलिए बहुत आसानी से हो सकता है कि हमारा पशु धन बड़ी मात्रा में है। वर्तमान योजना में बिना विशेष परिवर्तन के ही हम इस काम को आसानी से कर सकते हैं।

हाँ यह बात जरूर है कि इसके लिए हमें विदेशी नस्ल के बैलों का मोह छोड़ना पड़ेगा और इस बात के लिए एक बार फिर जोरदार प्रयास करना होगा कि देशी नस्ल के पशुओं की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हो। ऐसा कर निश्चय ही हम तेल ऊर्जा के क्षरण में काफी कमी ला सकेंगे और सही माने में ऊर्जा के एक स्रोत का विकल्प हम दुनिया के सामने रख सकेंगे। □

# गोवंश का विनाश क्यों ?

— नरेन्द्रभाई, सर्व सेवा संघ, वाराणसी

संसार में जितनी भी प्राचीन संस्कृतियाँ उभरी थीं उनमें आज भी अगर किसी में स्थायित्व है तो वह वैदिक संस्कृति में है। वैदिक संस्कृति का मूलमन्त्र है विचार-स्वातन्त्र्य और साधनामय जीवन। जब इस संस्कृति ने विचार-स्वातन्त्र्य को स्वीकार किया तो फिर सामाजिक स्तर पर किसी प्रकार के भी सम्प्रदाय धार्मिक रूढ़िवादिता और भावनात्मक स्तर पर स्थायी रूप से कोई समुदाय नहीं बने, क्योंकि विचार-स्वातन्त्र्य में इसका आधार ही नष्ट हो जाता है।

विचार-स्वातन्त्र्य के आधार पर भारत के जिस समाज की रचना हुई है उसमें कर्म विभाजन का एक तत्त्व ऐसा शामिल हुआ जिसने कालान्तर में समाज को जातिगत टुकड़ों में बांट दिया। वैदिक संस्कृति के अनुसार कर्म-विभाजन भी जन्म के आधार पर कोई स्थायी व्यवस्था नहीं थी। वह मनुष्य की रुचि, कुशलता, योग्यता, क्षमता तथा प्राप्त अवसर पर आधारित थी।

वैदिक संस्कृति ने मनुष्य-समाज के लिए उपभोग की सामग्री के उत्पादन आदि के बारे में भी जो चिन्तन और शोध किये हैं उनका आधार प्रकृति के अटल सिद्धान्तों से सहयोग करने का है। प्रकृति की शक्तियों का दोहन और शोषण वैदिक संस्कृति का आर्थिक सिद्धान्त नहीं है। इसी-लिए उसके अन्तर्गत जो खोजें हुई हैं उनमें उत्पादन की शक्ति के लिए मनुष्यबल, पशुबल और प्रकृति में कभी न समाप्त होनेवाली अन्य शक्तियों पर आधारित हैं।

उत्पादन के लिए चालक शक्ति की खोज के सिलसिले में घोड़े और गोधन की ईजाद अद्भुत ईजाद थी। वैदिक संस्कृति ने कृषिप्रधान जीवन को ही समुन्नत जीवन माना है। कृषि के साथ चालक शक्ति के रूप में गोधन सहजरूप से जुड़ गया है। भारत की मिट्टी, जलवायु तथा उपलब्ध साधनों में बड़ा वैचित्र्य है। काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और द्वारिका से लेकर कामरूप तक पूरे देश के लिए किसी भी क्षेत्र में एक फार्मूला लागू नहीं किया जा सकता। कहीं अत्यधिक गर्मी है, कहीं बहुत ठंड, कहीं घनघोर वृष्टि, कहीं पूरा सूखा प्रदेश, कहीं की मिट्टी बहुत सख्त, कहीं एकदम रेत ही रेत। इसी प्रकार से अन्य विचित्रताएँ भी हैं। इन सारी विचित्रताओं का समग्रतापूर्वक चिन्तन-मनन करके स्वावलम्बी और स्वायत्त व्यवस्था का उदय वैदिक संस्कृति के आधार पर भारत में हुआ था। कृषि कार्य के लिए गोधन को जब चालक शक्ति के रूप में प्रस्थापित किया गया तो उसको समाज का अंग मान कर गोमाता की संज्ञा दे डाली। गोमाता से मानव-पोषण के लिए दूध, पृथ्वी के पोषण के लिए गोबर-पेशाब तथा चालक शक्ति के रूप में बैल प्राप्त होने लगे। भारत की विचित्रताओं को खयाल में रखकर गोमाता की अनेक नस्लों को खोज कीग यी। बीकानेर, जैसलमेर आदि रेगिस्तानी इलाकों में, जहाँ पानी की अत्यधिक कमी है, वहाँ के लिए अलग नस्ल, पंजाब, जहाँ भरपूर पानी है, वहाँ के लिए अलग नस्ल, पहाड़ी, मैदानी, पठारी सब इलाकों में अलग-अलग नस्लों का विकास किया गया। हरियाणा, नागौरी, थारपारकर, सिन्धी, हल्लीकेरे, शाहीवाल, मालवी, कांकरेछा—कितनी नस्लें गिनाई जायें। इन सबके अपने-अपने अलग-अलग बुनियादी गुण हैं। जिस क्षेत्र में जिस नस्ल का विकास हुआ है वहाँ के लिए वह पूरी उपयोगी है। उनके गुणों का और भी अधिक विकास किया जा सकता है। इसलिए मैंने कहा कि भारतीय जीवन में किसी भी क्षेत्र में पूरे देश के लिए एक फार्मूला लागू नहीं किया जा सकता। वैज्ञानिक और नये विशेषज्ञ भारत में गोधन के बुनियादी गुणों का विकास करने के बजाय बाहरी नस्लें स्थापित कराने पर पूरी शक्ति लगा रहे हैं। गाय की जिन विदेशी नस्लों

को भारत में प्रवेश कराने का संगठित प्रयास चल रहा है वे कृषिप्रधान वैदिक संस्कृति के आधार को ही तोड़ देती हैं। क्योंकि उनका विकास औद्योगिक सभ्यता के पोषण के रूप में हुआ है।

गोधन के प्रश्न को लेकर भारत में इस समय दो बिन्दुओं पर बहुत भारी मतभेद है। १—दूध प्राप्त करने के लिए विदेशी नस्लों का प्रवेश कराया जाय, २—चालक शक्ति के रूप में औद्योगीकरण के कारण बैल की उपयोगिता समाप्त हो रही है। कृषिप्रधान संस्कृति वाले चिन्तन को उपरोक्त दोनों बातें मंजूर नहीं हैं। अतः उद्योगप्रधान संस्कृति और कृषिप्रधान संस्कृति की टक्कर के बीच भारत का समुन्नत गोधन पिस रहा है। लाखों गाय-बैल रोज इसलिए काटे जाते हैं कि उनका गोश्त अरब और ईरान देशों को भेजकर पेट्रोल और डीजल प्राप्त किया जाय। बड़े पैमाने पर होने वाले इस गोवध को रोकने की जब आवाज उठाई जाती है तो बूढ़े-ठेले असमर्थ गोधन का क्या किया जाय, ऐसा उल्टा सवाल पूछा जाता है। साथ ही ईसा ईऔर मुसलमानों को खाने के लिए सस्ता मांस भी गोवंश से मिलता है ऐसी दलील दी जाती है। ये सब दलीलें थोथी हैं। क्योंकि अरब और ईरान को प्रतिवर्ष लाखों टन गोमांस निर्यात करने के वायदों को पूरा करने के लिए ही उत्तम से उत्तम गाय, बैल, भैंस और भैंसों का वध करके उसकी पूर्ति की जाती है। गोवंश को जिस प्रकार से नष्ट किया जा रहा है उसके पीछे न तो बूढ़े-ठेले पशुओं से मुक्ति पाने का आशय है और न ही मुट्ठीभर ईसाई और मुसलमानों को गोमांस खिलाने का आशय है। वास्तव में तो यह कृषिप्रधान व्यवस्था पर औद्योगिक व्यवस्था का हमला है।

पशुओं के किसी भी बाजार में जाकर देखा जा सकता है कि उत्तम से उत्तम गाय, बैल, बछड़े, भैंस आदि कलकत्ता और बम्बई के व्यापारी खरीदते हैं। जो गोधन एक बार कलकत्ता, बम्बई की दिशा की ओर चला जाता है वह वापस लौटते हुए नहीं देखा गया है। कारण बहुत साफ है। इन सब उत्तम पशुओं का वध करके इनका गोश्त अरब देशों को भेजकर डीजल और पेट्रोल मँगाया जाता है।

भारत के सन्तों ने वैदिक संस्कृति के संरक्षण के लिए गोधन को इस प्रकार नष्ट होते हुए देखकर सरकार तथा नागरिकों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया था। सन्त विनोबा भावे ने गोवध बन्दी के रूप में वैदिक संस्कृति के रक्षण तथा कृषिप्रधान स्वावलम्बी स्वायत्त व्यवस्था की स्थापना के लिए आमरण अनशन तक की घोषणा कर दी थी। अखिल भारतीय कृषि गोसेवा संघ तथा अनेक अन्य संस्थान आज इस दिशा में सक्रिय हो गये हैं और भारत के जन-जीवन को जागृत करने के लिए प्रयत्नशील हैं। गाय का सवाल केवल धार्मिक या भावनात्मक सवाल नहीं है। उसके पीछे एक पूरी जीवन दृष्टि है। यदि यह केवल भावनात्मक और धार्मिक सवाल होता तो भारत सरकार को गोवध बन्दी और गोरक्षण की दिशा में कदम बढ़ाने में दिक्कत नहीं होती। पूरा प्रश्न सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक बुनियादी नीतियों के साथ जुड़ा हुआ है। औद्योगिक सभ्यता, जो पूरी तरह से प्रकृति के शोषण पर आधारित है, वह कभी नहीं चाहेगी कि कृषि-प्रधान स्वावलम्बी स्वायत्त व्यवस्था किसी भी रूप में पनपे। अतः भारत में गोरक्षण गोसंवर्धन और गोवध बन्दी का मसला जागतिक विचारधारा के साथ जुड़ा हुआ है। जब तक इसका चिन्तन उसी स्तर पर नहीं होगा तब तक गोमाता से जुड़े प्रश्नों का समाधान सम्भव नहीं है।

यह अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि गोवंश का विनाश मुट्ठी भर मुसलमान या ईसाइयों को गोमांस की पूर्ति करने अथवा बूढ़े और असमर्थ पशुओं की समस्या को हल करने के लिए नहीं हो रहा है। गोवंश का विनाश हो रहा है लाखों टन गोश्त अरब देशों को निर्यात करके उनसे पेट्रोल और डीजल प्राप्त करने के लिए। सौन्दर्य प्रसाधनों का उत्पादन तथा क्रिकेट की गेंद, वालीबाल आदि जैसे अन्तर्राष्ट्रीय खेलों की सामग्री बनाने के लिए भी गोवंश का विनाश हो रहा है।

देशवासियो सावधान! गोमाता की पुकार वैदिक संस्कृति तथा स्वावलम्बी स्वायत्त व्यवस्था की स्थापना की पुकार है। इसीलिए गांधीजी के निर्देश पर गान्धी विचार को मानने-वाले देश के प्रत्येक नागरिक को इस बिन्दु पर संगठित और सक्रिय करने का प्रयास कर रहे हैं।

●

# गो-सेवा से सुखद परिवर्तन

**— एक गो-सेवक कृषक**

मेरे पूर्वज गांव में सदा सम्पन्न रहे, मेरे पिताजी का जीवन भी उन्नत रहा, वे चार-पाँच घण्टे ईश्वराराधन में लगाते और शेष समय साहूकारी, गल्ला बीज के लिए देने में और खेती के कार्य में व्यतीत करते। पिताजी के परलोक गमन के बाद गृहस्थी का सारा दायित्व मुझपर आ पड़ा। किन्तु क्रमशः सम्पत्ति का ह्रास होने लगा। देखते-देखते सारा काम चौपट हो गया।

मैं रात-दिन चिन्तित रहने लगा। भाग्य ने जैसे मेरा साथ छोड़ दिया था। मैं जिस कार्य में हाथ डालता, उसी में असफल होता। मेरे दो और छोटे भाई हैं। उन लोगों की इच्छा से मुझे उनसे पृथक् होना पड़ा। सारी सम्पत्ति तीन भागों में बराबर-बराबर बाँटकर हम सब अपना-अपना कार्य चलाने लगे। मुझे चार वर्ष बीत गये, किन्तु मेरी दशा उत्तरोत्तर अवनत होती गयी। गाँव के लोग मुझे निरुद्यमी और आलसी कहने लगे। मुझपर ऋण भी काफी हो गया।

एक दिन चिन्तित मन से चारपाई पर मैं लेटा हुआ था कि मेरी आँख लग गयी। निद्रा में मुझे लगा कि गाय-बैल मुझे मारने दौड़ रहे हैं और मनुष्य की भाषा में बोलते हुए मुझसे कह रहे हैं कि 'अभी हम तुझे और तंग करेंगे। तूने अपने खाने-पीने के सिवा कभी हमारी भी खबर ली है कि हम भूखे या प्यासे हैं ? गो-शाला में कभी जाकर देखा भी है कि वह साफ है या हम गोबर-मूत्र में पड़े हैं ? तू अपने इसी पाप का परिणाम भोग रहा है। तू अब भी चेत जा और अपना तरीका बदल दे, नहीं तो अन्ततः तेरा सर्वनाश हो जायेगा।'

गाय-बैलों के वचन सुनकर मुझे बहुत व्यथा हुई और मैं चौंककर जाग उठा। मैंने देखा, यह तो स्वप्न था। रात आधी से अधिक बीत चुकी थी। किन्तु मैं उसी समय लालटेन लेकर गोशाला में गया। वहाँ देखा, सारे पशु भूखे खूंटे से बँधे हैं। उनके आगे घास-भूसा का एक तिनका भी नहीं है। कूड़े का ढेर लगा है। मैं मन ही मन पश्चात्ताप करने लगा। मैंने उसी क्षण अपने हाथ से गोशाला को साफ करना शुरू किया। उस दिन से हर समय मैं अपने जानवरों एवं गोशाला पर ध्यान रखने लगा। प्रातः-सायं गो-दुग्ध अपने हाथ से दुहना और चारा-घास एवं स्वच्छ जल अपने सामने डलवाना मेरा मुख्य कर्तव्य हो गया। मेरे गाय-बैल जब चरने जाते, तब मैं गोशाला अपने हाथों से साफ करता। कूड़ा-करकट गड्ढे में डालता और उसकी अच्छी खाद बनती। मेरे जानवर स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट हो गये। घृत-दुग्ध पर्याप्त मिलने लगा। बैलों के सुस्वास्थ्य के कारण मेरी कृषि चमक उठी और अनाज पाँचगुना-छहगुना उत्पन्न होने लगा। खेती में मेरी रुचि बढ़ गयी और निराशा दूर हो गयी। ऋण भी अधिकांश चुका दिया गया। मेरी स्थिति में काफी परिवर्तन हो गया। मुझे निरुद्यमी, आलसी और अभागे कहनेवाले लोग अब मेरी प्रशंसा करने लगे।

यह घटना बिलकुल सच्ची है। रईसी के चक्कर में मैं अपनी सम्पत्ति का नाश कर चुका था, किन्तु आज ईश्वर की कृपा, गो-माता के आशीष और अपने हाथों काम करने के कारण मेरी दशा अत्यन्त सुन्दर हो गयी। यदि कोई गोपालक कृषक भाई मेरी तरह दरिद्रनारायण के शिकार हो गये हों तो उन्हें मेरे पथ का अनुसरण करना चाहिए। भगवान् पर विश्वास और गो-माता की सेवा से बुरी-से-बुरी हालत बदलकर अच्छी हो जाएगी।

●

## गाय कैसे बचेगी

[ पृष्ठ ११ का शेषांश ]

बचाने से भी अधिक आवश्यक गाय के प्रति भारतीय भावना को बचाना है। एक बार गाय का कटना दुःख के साथ सहन कर सकता हूँ। लेकिन गाय के प्रति आदर की भावना का मिटना नहीं देख सकता। गाय का विकास करके भारत के विकास में उसका योग लेना यह हमारा कर्तव्य है, धर्म है। परन्तु यह हमारी चतुराई और पुरुषार्थ पर निर्भर है। गोवध बन्द होने से आज की गाय की दुर्दशा देखकर हमारी कर्तव्य-बुद्धि जागृत हो तभी वह हमें अध्यात्म और धर्म की ओर ले जाने में सफल होगी, ऐसा हमारा विश्वास है। गाय बचाये वगैर हम बच नहीं सकते। गायों की परवरिश सरकार के द्वारा नहीं हो सकती, जनता के द्वारा ही हो सकती है। कुछ सक्रिय कार्यक्रम बनाकर वे इस जिम्मेवारी को उठायें। अ. भा. गोसेवा संघ द्वारा गायों की परवरिश, नस्लसुधार, बैलशक्ति, दूध की वृद्धि पर काफी साहित्य मौजूद है। महात्माजी और विनोबाजी ने इस पर काफी लिखा है। आज गाय पाली नहीं जा रही है, रखी जा रही है। जैसे नौकर को रखते हैं। काम करता है तब तक उसे रखते हैं और सूखने के बाद उसे निकाल देते हैं। वह कसाई के हाथों में जाती है। वह हत्या का पाप आज समाज पर है, कसाई पर नहीं। कसाई पेट के लिए काटता है। गाय की अच्छी तरह से परवरिश हो तो वह इतना दूध देने लगेगी और उसकी इतनी कीमत बढ़ जाएगी कि कसाई उसे काट नहीं सकेगा। कसाई गाय का दुश्मन नहीं है, पेट का गुलाम है।

□

## भगवान् श्रीकृष्ण की गो-सेवा

ततश्च पौगण्डवयः श्रितौ व्रजे बभूवतुस्तौ पशुपालसम्मितौ।
गाश्चारयन्तौ सखिभिः समं पदैर्वृन्दावनं पुण्यमतीव चक्रतुः ॥१॥
तन्माधवो वेणुमुदीरयन् वृतो गोपैर्गृणद्भिः स्वयशोबलान्वितः।
पशून् पुरस्कृत्य पशव्यमाविशद् विहर्तुकामः कुसुमाकरं वनम् ॥२॥

(श्रीमद्भागवत, १०।१५।१-२)

जब भगवान् कृष्ण और बलराम दस वर्ष के होने पर गाय चरानेवाले ग्वालों के समान हो गये तब उन्होंने अन्य मित्र ग्वालों के साथ वृन्दावन में पैदल विचरण करते हुए गाय चराने का अत्यन्त पुनीत कार्य आरम्भ कर दिया।

ग्वाले उनको चारों ओर से घेरकर उनके गुणों का बखान कर रहे थे। उन मित्रों से घिरे कृष्ण ने बलराम के साथ गायों के पीछे-पीछे वंशी बजाते हुए पुष्पित चरागाह में सानन्द प्रवेश किया। ( ऐसा था भगवान् श्रीकृष्ण का गो-माता के प्रति दिव्य प्रेम। )

## श्री काशी जीवदयाविस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

# आय-व्यय विवरण

### संवत् २०३७-३८ ( २३-१०-१९८० से १२-९-१९८१ तक )

## आय

| आय | | |
|---|---|---|
| **आमदनी बाजार द्वारा** | | |
| धर्मादा | २०३८०-०० | |
| गोपाष्टमी मेला | १८५०९-६८ | |
| गोलक पेटी | १८८४-४१ | |
| रोजगार आमदनी | ९०४२-२७ | |
| विशेष सहायता | २२५१-०० | |
| गोपाष्टमी स्मारिका | ८८३-७९ | |
| | | ५२९५१-१५ |
| **आमदनी गोशाला द्वारा** | | |
| दूध | ६७९७-२५ | |
| गो बरदाई | ९२७-०० | |
| गो दाखिला | १७४-०० | |
| गो खुराकी | १६२-०० | |
| गोबर खाद | १९७-०० | |
| | | ८२५७-२५ |
| **आमदनी जायदाद द्वारा** | | |
| किराया | १४९८५-७५ | |
| जलकर | १७३७-४२ | |
| ब्याज | १४७२८-२८ | |
| जायदाद लीज रेंट | ५००-०० | |
| | | ३१९५१-४५ |
| **आमदनी शाखाओं द्वारा** | | |
| बावन बीघा | ४४६७४-७९ | |
| रामेश्वर | ११९९७-२० | |
| सारंग | ३००-०० | |
| | | ५६९७१-९९ |
| **अनुदान** | | |
| पशुपालन विभाग | १०००-०० | |
| महापालिका | ३०००-०० | |
| | | ४०००-०० |
| | | १५४१३१-८४ |
| | घाटा | २०३९७-१२ |
| | योग | १७४५२८-९६ |

## व्यय

| व्यय | | |
|---|---|---|
| **खर्च गोशाला** | | |
| पशु आहार | १५६५१-७१ | |
| दवाई | १३११-३७ | |
| | | १६९६३-०८ |
| **कार्यालय खर्च** | | |
| स्टेशनरी छपाई | ७७०-६७ | |
| रोशनी व बिजली व्यय | ७९५-१५ | |
| वेतन | १७६६६-१६ | |
| सवारी भाड़ा | १३६२-४९ | |
| डाक व्यय | ३८-५५ | |
| बैंक कमीशन | १६१-५० | |
| फुटकर खर्च | ११११-३७ | |
| सफर खर्च | १५०४-४५ | |
| टेलीफोन खर्च | ८५४-७५ | |
| आडिट फीस | ४००-०० | |
| | | २४६६५-०९ |
| **मूल्य ह्रास** | | |
| साइकिल | ६२-७३ | |
| टायर गाड़ी | १०३-३३ | |
| रिक्शा ट्राली | ९६-०० | |
| फर्नीचर | १८५-२७ | |
| इंजन पम्प | ८६५-९६ | |
| ट्रेक्टर | १६२७२-५६ | |
| | | १७५८५-८५ |
| **खर्च शाखाओं द्वारा** | | |
| बावन बीघा | ९३३५०-२६ | |
| रामेश्वर | १३१८१-६९ | |
| सारंग | १३३-६० | |
| सारंग नगर कालोनी | २५०-०० | |
| | | १०६९१५-५५ |
| **अन्य खर्च** | | |
| गोपाष्टमी मेला | २२०२-१२ | |
| अदालत खर्च | ४३८-०० | |
| जायदाद मरम्मत | २०५८-३७ | |
| पम्प मरम्मत | ३६-४० | |
| भूमि भवन व जलकर | ३४६४-५० | |
| उ० प्र० गोशाला फेडरेशन | २००-०० | |
| | | ८३९९-३९ |
| | योग | १७४५२८-९६ |

## श्री काशी जीवदयाविस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

# वार्षिक चिट्ठा

### संवत् २०३७–३८ ( १९८०-८१ )

**दायित्व**

| दायित्व | | |
|---|---|---|
| गोशाला कोष, शेष गत वर्ष | ३१७९८-२५ | |
| घाटा इस वर्ष का | २०३९७-१२ | |
| | | ११४०१-१३ |
| स्थायी कोष | | १६००००-०० |
| कृषि विकास कोष | | १५८८५-०० |
| कूपन एडवांस | | १३४२-४० |
| वाराणसी नगर महापालिका | | ३४६४-५० |
| ट्यूबवेल सहायता-अमानत | | १२०००-०० |
| गो खरीद-अमानत | | १६०३-०० |
| यूको बैंक, चालू खाता | | ९०८८-९० |
| बैंक आफ इंडिया, लोन | | ७५००-०० |
| यूको बैंक-लोन | | ५५९१६-०० |
| लक्ष्मी पाइप एण्ड मशीनरी स्टोर्स | | ३५५१-९० |
| स्वस्तिक इण्डस्ट्रीज | | २७४३-८८ |
| तहसील, वाराणसी (लगान) | | २७५१-५५ |
| विकास निगम, वाराणसी मण्डल | | ३८९-०० |
| कृषि विभाग, उ० प्र० सरकार | | १२८-२५ |
| अग्रवाल आटोमोबाइल्स | | ५३३-०० |
| रामनाथ चूनीवाला | | २७२-२५ |
| सोहन इलेक्ट्रिक स्टोर्स | | १६०-०० |
| नागर ट्रेडिंग कम्पनी | | ७९-२५ |
| चुन्नीलाल कन्हैयालाल | | ७४-०० |
| पुरुषोत्तम अग्रवाल | | १०००-०० |
| अशोककुमार | | ५-०० |
| बकाया वेतन-बावन बीघा | | १०३५-०० |
| बकाया वेतन-रामेश्वर | | १०७१-९९ |
| बकाया मजदूरी | | ६५६-०० |
| अमानत | | ११५०९-६० |
| जयप्रकाशनारायण सिंह | | १७५-०० |
| मे० घनश्यामदास एण्ड कम्पनी | | ४००-०० |
| | | ३०४७३६-६० |

**सम्पत्ति**

| सम्पत्ति | | |
|---|---|---|
| सायकिल | ३१३-६७ | |
| मूल्य ह्रास | ६२-७३ | |
| | | २५०९४ |
| टायर गाड़ी | ५१६-६६ | |
| मूल्य ह्रास | १०३-३३ | |
| | | ४१३-३३ |
| रिक्सा ट्राली | ४८०-०० | |
| मूल्य ह्रास | ९६-०० | |
| | | ३८४-०० |
| फर्नीचर फिटिंग | १८५२-६७ | |
| मूल्य ह्रास | १८५-२७ | |
| | | १६६७-४० |
| इंजिन पम्प | ८६५९-६५ | |
| मूल्य ह्रास | ८६५-९६ | |
| | | ७७९३-६९ |
| ट्रेक्टर | ८१३६२-७८ | |
| मूल्य ह्रास २०% | १६२७२-५६ | |
| | | ६५०९०-२२ |
| यूको बैंक, बचत खाता | | ९८३१-२१ |
| यूनियन बैंक, बचत खाता | | ९२०-५५ |
| बैंक आफ इण्डिया, बचत खाता | | १९१२-५२ |
| बैंक आफ इण्डिया, एफ डी | | ८५०००-०० |
| यूको बैंक, एफ डी | | ७५०००-०० |
| यूको बैंक, प्राप्य ब्याज | | २१९९५-२२ |
| बनारस स्टेट बैंक-एफ डी | | ५०००-०० |
| यूनियन बैंक, एफ डी | | १००००-०० |
| भूमि खरीद | | ७७५४-७२ |
| पशु खरीद | | ४०००-०० |
| बनारस इले० लाइट एण्ड पावर कं० | | ४३०-०० |
| यू० पी० स्टेट इले० बोर्ड | | १३८-०० |
| टेलीफोन एडवांस | | ५००-०० |
| डॉ. जगदीश सिंह | | २६९६-७५ |
| गोबर गैस प्लांट | | ४००-०० |
| मुमुक्षु भवन सभा | | ४८-३० |
| मेरठ ट्यूबवेल कम्पनी | | ८८५-०० |
| लक्ष्मणदास जी | | ८०-८७ |
| गोवर्द्धनदास जी | | १५०-०० |
| बकाया किराया | | २०३२-५० |
| नकद रोकड़ | | ३६१-३८ |
| | | ३०४७३६-६० |

**आय-व्यय निरीक्षक का प्रतिवेदन**

अलग से दी गयी रिपोर्ट के अनुसार हिसाब

जांचा और सही पाया।

**घनश्यामदास एण्ड कम्पनी, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट**

बांसफाटक, वाराणसी

दीपावली २७ अक्तूबर १९८१

### श्री काशी जीवदयाविस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

# आय-व्यय विवरण

## बावनबीघा गोशाला

### संवत् २०३७-३८

| आय | | व्यय | | |
|---|---|---|---|---|
| धर्मादा | ४९-०० | पशु आहार | | ३९०१-२१ |
| गोदाखिला | १०१-०० | कृषि मध्ये खर्च | | |
| गो बरदाई | ११०-०० | जुताई | १३८६-२५ | |
| किराया | ६०-०० | ट्रेक्टर व इंजन इंधन खर्च | ४२४९-७७ | |
| कृषि व फल बगीचा | १७५५५-७९ | तेल पेराई | २३५-०० | |
| लकड़ी बिक्री | ६००-०० | बीज | २५९५-६५ | |
| ट्रेक्टर जुताई से प्राप्त | १९३-०० | खाद | १३१०-३१ | |
| थ्रेशिंग से प्राप्त | २६६-०० | कृषि मजदूरी | ३९८०-७१ | |
| भवन निर्माण में प्राप्त सहायता | २१६६०-०० | लगान | २६१६-२६ | |
| पम्प खरीद में प्राप्त सहायता | २०००-०० | पैकिंग खर्च | ५४९-६५ | |
| वृक्षारोपण में प्राप्त सहायता | ५२९-०० | | | १६९२३-६४ |
| पुराना थ्रेशर बिक्री | १५५१-०० | अन्य खर्च | | |
| योग : | ४४६७४-७९ | दवाई | ८८-९० | |
| | | वेतन | २४०७०-९४ | |
| | | रोशनी व बिजली खर्च | ४५१-२३ | |
| | | वृक्षारोपण | १५७-०० | |
| | | भवन निर्माण व मरम्मत | २७७८२-५९ | |
| | | बैलगाड़ी मरम्मत | ३१०-०० | |
| | | मकान किराया | १६००-०० | |
| | | मोटर पम्प मरम्मत व फिटिंग | १००३-४५ | |
| | | कृषि यन्त्र खरीद-मरम्मत | २७१६-३४ | |
| | | ट्यूबवेल वोरिंग खर्च | १६५०-०० | |
| | | फुटकर खर्च | १४२३-४६ | |
| | | मार्ग व्यय | १२७१-५० | |
| | | | | ७२५२५-४१ |
| | | | योग : | ९३३५०-२६ |

श्री काशी जीवदयाविस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

# आय-व्यय विवरण

## रामेश्वर गोशाला

### संवत् २०३७-३८

| खाता नाम | आय | व्यय |
|---|---|---|
| कृषि से आय | १०६३०-२० | |
| किराया | १३६७-०० | |
| बीज | | ८०-५० |
| कृषि मजदूरी | | १४९-७० |
| पैकिंग | | ६-०० |
| लगान | | ४६०२-१० |
| तेल पेराई | | १८-०० |
| कृषि यन्त्र मरम्मत | | ३२-०० |
| पशु आहार | | २१५-२५ |
| वेतन | | ६७१०-७४ |
| जायदाद मरम्मत | | ११७-०० |
| दवाई | | २३-५० |
| मुकदमा खर्च | | ४८-५० |
| रोशनी बिजली | | ५५-३० |
| फुटकर खर्च | | ५११-३५ |
| पम्प मरम्मत | | ३००-०० |
| मार्ग व्यय | | ३११-७५ |
| | ११९९७-२० | १३१८१-६९ |

# श्री काशी जीवदया-विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

## अनुमानित आय-व्ययक, संवत् २०३८–३९ वि०

### आय

| विवरण | | |
|---|---|---|
| आमदनी बाजार द्वारा | | ५२,०००-०० |
| गोपाष्टमी मेला | २०,०००-०० | |
| धर्मार्थ चन्दा | १५,०००-०० | |
| रोजगार आमदनी | १०,०००-०० | |
| गोलक पेटी | २,०००-०० | |
| अन्य | ५,०००-०० | |
| | ५२,०००-०० | |
| आमदनी गोशाला | | १६,०००-०० |
| दूध बिक्री | ८,५००-०० | |
| गो-दाखिला, गो-बरदाई, गोखुराकी गोबर खाद | ७,५००-०० | |
| | १६,०००-०० | |
| आमदनी जायदाद से | | ३६,०००-०० |
| किराया | १७,२००-०० | |
| ब्याज से आय | १६,०००-०० | |
| जलकर | १,८००-०० | |
| अन्य | १,०००-०० | |
| | ३६,०००-०० | |
| आमदनी शाखाओं से | | ६६०००-०० |
| बावनबीघा गोशाला | ५०,०००-०० | |
| रामेश्वर गोशाला | १५,०००-०० | |
| सारंग गोशाला | १,०००-०० | |
| | ६६,०००-०० | |
| योग | | १,७०,०००-०० |
| दानदाताओं तथा शासक-मण्डल से घाटे की पूर्ति के लिए विशेष अनुदान | | ८०,०००-०० |
| | | २,५०,०००-०० |

### व्यय

| विवरण | | |
|---|---|---|
| पशु खाद्यान्न | | २०,०००-०० |
| वेतन, टैक्स, कार्यालय व्यय आदि | | ६०,५००-०० |
| वेतन | २२,५००-०० | |
| रोशनी बिजली | १,५००-०० | |
| स्टेशनरी छपाई | १,०००-०० | |
| विज्ञापन प्रचार | ५००-०० | |
| सवारी भाड़ा, डाक तथा यात्रा खर्च | १,५००-०० | |
| कानूनी व्यय | १,५००-०० | |
| पशु चिकित्सा | १,०००-०० | |
| आडिट फीस | ४००-०० | |
| जल-कर तथा भवन-कर | ४,५००-०० | |
| गोपाष्टमी मेला खर्च | २,५००-०० | |
| पशु खरीद | १०,०००-०० | |
| मरम्मत | १०,०००-०० | |
| फोन | १,१००-०० | |
| अन्य फुटकर व्यय | २,५००-०० | |
| बावनबीघा गोशाला खर्च | | १,४०,०००-०० |
| ट्रैक्टर किस्त | ३०,५००-०० | |
| पशु खाद्यान्न | ५,०००-०० | |
| कृषि व्यय | २५,०००-०० | |
| यन्त्र क्रय तथा भवन मरम्मत | १०,०००-०० | |
| यन्त्र मरम्मत व बिजली खर्च | २,५००-०० | |
| ब्याज ट्रैक्टर ऋण पर | २०,०००-०० | |
| मालगुजारी, विकास व सिंचाई-कर | ३,०००-०० | |
| वेतन | २५,०००-०० | |
| बोरिंग | १५,०००-०० | |
| फुटकर व्यय | २,०००-०० | |
| मार्ग व्यय | २,०००-०० | |
| रामेश्वर गोशाला खर्च | | २९,५००-०० |
| पशु खाद्यान्न | १,५००-०० | |
| कृषि व्यय | २,५००-०० | |
| वेतन | ९,०००-०० | |
| मालगुजारी आदि | ५,०००-०० | |
| यन्त्र क्रय तथा यन्त्र मरम्मत | ५,०००-०० | |
| मरम्मत | ५,०००-०० | |
| मार्ग व्यय | ५००-०० | |
| अन्य फुटकर व्यय | १,०००-०० | |
| | | २,५०,०००-०० |

## श्री काशी जीवदया-विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला वाराणसी के विगत इक्कीस वर्षों के आँकड़ों पर विहंगम दृष्टि

| संवत् | पशुसंख्या | आय | व्यय | बचत | हानि |
|---|---|---|---|---|---|
| २०१६-१७ | २८१ | ७३१५३)१४ | ७८६९८)३८ | — | ६५४४)४४ |
| २०१७-१८ | २३८ | ७०४२८)६० | ६९९६८)८३ | ४५९)७७ | — |
| २०१८-१९ | २१२ | ७०९७३)८४ | ६७२५३)४८ | ३७२०)३६ | — |
| २०१९-२० | १८० | ६२९९३)८१ | ८५०१४)०९ | — | २२०२०)२८ |
| २०२०-२१ | १८७ | ७३५८०)१२ | ७६८३०)९० | — | ३२५२)७८ |
| २०२१-२२ | १५५ | ७९७८२)५३ | ७८७३४)५६ | १०५३)९७ | — |
| २०२२-२३ | १५३ | ७९५११)६४ | ८३५६१)४९ | — | ४०४९)८५ |
| २०२३-२४ | १४३ | ७३७००)९७ | ७५५८९)५० | — | १८८८)५३ |
| २०२४-२५ | १२३ | ९२३९०)९४ | ७४६७०)७५ | १७७२०)१९ | — |
| २०२५-२६ | १३३ | १०२१६२) | ९५७३१)७५ | ६४६०)९५ | — |
| २०२६-२७ | १४१ | १०६५७०)५० | ९४७०९)७४ | ११८६०)७६ | — |
| २०२७-२८ | १४४ | ११५८५४)२९ | १०२८४०)०५ | १३०११)२४ | — |
| २०२८-२९ | १४८ | १४६६३८)५९ | १५११९०४)०१ | — | ५२६५)४२ |
| २०२९-३० | १५९ | १३३५३८)७७ | १४२७९७)७२ | — | ८९२५)९४ |
| २०३०-३१ | १४० | १५७५००)४० | १८७८६९)५३ | — | ३०३६९)१३ |
| २०३१-३२ | १०३ | १२६१६५)४९ | १२४८७७)४७ | १२८८)०२ | — |
| २०३२-३३ | ९६ | १०८१५३)४५ | १०५२९२)०३ | — | ७१३८)५८ |
| २०३३-३४ | ७३ | १०८१०५)४१ | १०६८५७)६० | १२४७)८१ | — |
| २०३४-३५ | ७७ | ११९१६३)६३ | ११२१२८)८९ | ७०३४)७४ | — |
| २०३५-३६ | ७७ | ११५९६६)३७ | १०३४६२)८७ | १२५०३)५० | — |
| २०३६-३७ | ८१ | १३७९४२)३८ | १२१७५१)६९ | १६१९०)६९ | — |
| २०३७-३८ | ६४ | १५४१३१)८४ | १७४५२८)९६ | — | २०३९७)१२ |

# गोपाष्टमी मेला से आय

## संवत् २०३७-३८

**बड़ी थाल**

| | |
|---|---|
| श्री छन्नूलाल बालकृष्णदास एण्ड संस | १५००) |
| ,, नगर महापालिका वाराणसी | ११११) |
| ,, सेठ आनन्दराम जयपुरिया स्मृति भवन | ११०१) |
| ,, छन्नूलाल दामोदरदास | ७०१) |
| श्रीमती केशरदेवी गोयनका | ५०१) |
| श्री छन्नूलाल प्रहलाददास | ३०१) |
| ,, वल्लभदास गोकुलदास | ३०१) |
| ,, कोठारी चैरिटी ट्रस्ट | ३००) |
| ,, ठाकुरदास सुरेका चैरिटी फण्ड | २५१) |
| ,, विश्वनाथप्रसाद नन्दलाल | २५१) |
| ,, विश्वनाथजी केजरीवाल | २०१) |
| ,, अन्नपूर्णा मिल्स् | २०१) |
| ,, मेघराज भगवानदास | १५१) |
| ,, चित्रकला | १५१) |
| ,, श्रीराम जगन्नाथ | १०१) |
| ,, राधाकृष्ण विमलकुमार | १०१) |
| ,, हजारीलाल दामोदरदास | १०१) |
| ,, सुचित्रा | १०१) |
| ,, मोहनलाल किशनचन्द | १०१) |
| ,, श्रीगोपालजी खेतान | १०१) |
| ,, श्यामसुन्दर कृष्णमुरारी | १०१) |
| ,, सुन्दरमल गौरीशंकर | १०१) |
| ,, भालोटिया सिल्क हाउस | १०१) |
| ,, रामबल्लभ गिन्नीप्रसाद | १०१) |
| ,, केडिया कलाकेन्द्र | १०१) |
| ,, श्रीराम सूरजमल | १०१) |
| ,, सीतारामजी खेमका | १०१) |
| श्री वल्लभदास विट्ठलदास | १०१) |
| ,, परमानन्द स्टोर्स | १०१) |
| ,, पूँगीमल बल्लूसिंह | १०१) |
| ,, बनारस केमिकल फैक्टरी | १०१) |
| ,, रामजीवन भरतकुमार | १०१) |
| ,, पंकज स्टोर्स | १०१) |
| ,, विश्वनाथ बुचचीलाल | १०१) |
| ,, आत्माराम हरीशंकर | १०१) |
| ,, श्रीरामजी वीरेन्द्रकुमार | १०१ |
| ,, गणेशराम देवकिशन | १०१) |
| ,, नन्देश्वर आयल मिल | १०१) |
| ,, लाला विशनदास जगदीश कुमार | १०१) |
| ,, जगदीशनारायण एण्ड संस | ५१) |
| ,, श्रीराम ओंकारमल एण्ड कम्पनी | ५१) |
| ,, विश्वनाथप्रसाद जालान | ५१) |
| ,, पल्प मेटेरियल्स | ५१) |
| ,, कमलाप्रसाद मोहनलाल | ५१) |
| ,, विश्वनाथप्रसाद अग्रवाल | ५१) |
| ,, बाजोरिया सिल्क हाउस | ५१) |
| ,, गौरीशंकरजी काबरा | ५१) |
| ,, अजीता टेक्सटाइल्स | ५१) |
| ,, श्रेयस | ५१) |
| ,, प्रहलादका सिल्क हाउस | ५१) |
| ,, पूरण आयल मिल | २५) |
| ,, बनवारीलाल केडिया | २५) |
| ,, नवनीतदास मुकुन्दलाल | २५) |
| ,, कृष्णदास वृजमोहनदास | २५) |
| ,, दी कोल्डस्टोरेज कार्पो. आफ इन्डिया | २१) |
| ,, हिम्मतराम वृजमोहन | २१) |

| | |
|---|---|
| गुप्तदान | २१) |
| श्री मथुरालाल कमलकिशोर | २१) |
| ,, एस० कुमार | २१) |
| ,, घासीराम मोहनलाल | २१) |
| ,, किशनलाल जालान | २१) |
| ,, दामोदरदासजी शर्मा | २१) |
| ,, बनारस काटेज इन्डस्ट्रीज | २१) |
| ,, दामोदरदास प्रहलाददास | २१) |
| ,, शक्ति साड़ी इम्पोरियम | २१) |
| ,, काशी साड़ी सेंटर | २१) |
| ,, सुरेन्द्रकुमार सुनीलकुमार | १५) |
| ,, केदारनाथजी | ११) |
| ,, हरी दाल मिल | ११) |
| ,, महेशप्रसाद केदारनाथ | ११) |
| ,, एस. किशोरीलाल एण्ड संस | ११) |
| ,, वाराणसी साड़ी भण्डार | ११) |
| ,, श्यामसुन्दरजी अग्रवाल | ११) |
| ,, पुरुषोत्तमदास रस्तोगी | ११) |
| ,, गोपालजी रस्तोगी | ११) |
| ,, छोंगालाल तिवारी | ११) |
| ,, कृष्णगोपाल पसारी | ११) |
| ,, विष्णु पसारी | ११) |
| ,, द्वारकादास चौथमल | ११) |
| ,, सीतारामजी केडिया | ११) |
| श्रीमती यशोदादेवी केडिया | ११) |
| श्री सराफ ब्रदर्स | ११) |
| ,, अशोक साड़ी इम्पोरियम | ११) |
| ,, अंजनीकुमार श्रीप्रकाश | ११) |
| ,, किशनलालजी ऋषिकेश | ११) |
| ,, भारती ट्यूब कम्पनी | ११) |
| ,, कृष्णदास ज्वालाप्रसाद | ११) |
| ,, पूरणमलजी धानुका | ११) |
| ,, दलसुखराय जयदयाल | ११) |
| ,, महालक्ष्मी साड़ी सेण्टर | ११) |
| ,, राणीसती वस्त्रालय | ११) |
| ,, गोपालदासजी पीताम्बरवाले | ११) |
| ,, गिरधरदासजी हाथीदाँतवाले | ११) |
| ,, मदनगोपालजी लल्लूप्रसाद | ११) |

| | |
|---|---|
| श्री लक्ष्मणदास गुप्त | ११) |
| ,, मनोहरदास मथुरादास | ११) |
| ,, सीताराम लोहिया | ११) |
| ,, श्रीचन्द्र एण्ड सन्स | ११) |
| ,, कन्हैयालाल मोतीलाल | ११) |
| ,, चौखम्बा उद्योग | ११) |
| ,, फेराजिनीस बेकरी | ११) |
| ,, विश्वनाथ भण्डार | ११) |
| ,, विश्वनाथ टी सेण्टर | ११) |
| श्रीमती रुक्मिणी बाई | ११) |
| ,, भगवती बाई | ११) |
| श्रीमोतीलालजी | ५) |
| ,, मुरारीलाल सराफ | ५) |
| ,, शिव इण्टर प्राइजेज | ५) |
| ,, सत्यनारायण टीबड़ेवाल | ५) |
| ,, कमलनारायण सरीन | ५) |
| ,, नारायणदास गंगादास | ५) |
| ,, त्रिलोकचन्द्र लखमानी | ५) |
| ,, दुर्गाप्रसाद मदनमोहन सुरेका | ५) |
| ,, बलदेवदास गुजराती | ५) |
| ,, रघुनाथप्रसाद प्रह्लादका | ५) |
| ,, अवधेशकुमार प्रह्लादका | ५) |
| ,, संजयकुमार प्रह्लादका | ५) |
| उमाकुमारी प्रह्लादका | ५) |
| दीपाकुमारी प्रह्लादका | ५) |
| ,, शिवकुमार प्रह्लादका | ५) |
| श्रीमती श्यामादेवी | २) |
| श्रीलक्ष्मीनारायण मूँदड़ा | २) |
| ,, संकठाप्रसादजी | २) |
| | १०९७४) |

छोटी थाल से—

| | |
|---|---|
| श्री मकुन्ददास एण्ड कम्पनी | ५०१) |
| ,, इण्डियन टेक्सटाइल्स | २४५)६० |
| ,, गोपालदास किशनदास | २०१) |
| ,, हीरालाल जगन्नाथ | १९५)६८ |
| ,, श्यामसुन्दरदास विश्वम्भरी | १७२)५० |
| ,, लक्ष्मणजी तिवारी | १०१) |

श्री टेकराम रामनिवास १०१)
,, गोपालदास बालकृष्णदास १०१)
,, अनुपम साड़ी केन्द्र १०१)
,, दुर्गाप्रसाद एण्ड सन्स १०१)
,, छन्नूलाल कैलाशनाथ ५१)
,, बल्देवदास खेतान ५१)
,, बल्देवदास खेतान एण्ड कम्पनी ५१)
,, प्रह्लाददासजी टाईवाला ५१)
,, गोकुलदास विश्वम्भरी ५१)
,, राम आयल मिल ५१)
,, चौधरी ब्रदर्स ५१)
,, बाबूलाल साहू ५१)
,, विश्वेश्वरप्रसाद गुलाब साव ५१)
,, सरायनदासजी ५१)
,, राजाराम सत्यनारायणप्रसाद ५१)
,, सत्यनारायणजी धूत ५१)
,, टाटा टेक्सटाइल्स ३१)
,, मोतीलालजी खेतान ३१)
,, राधेश्याम सिल्क स्टोर्स ३१)
,, कृष्णदास एण्ड सन्स २५)
,, रामलखन सन्तोषकुमार २५)
,, रामखेलावन २५)
,, कृष्णप्रियाबेटीजी २१)
,, मतीकिशोरीदेवी २१)
,, अग्रवाल वस्त्रालय २१)
,, छन्नूलाल कन्हैयालाल २१)
,, शिवकिशुनदास वाहृती ट्रस्ट स्टेट २१)
,, लक्ष्मी ट्रेडिंग कम्पनी २१)
,, गीता प्रेस २१)
,, ओमप्रकाश जालान २१)
,, भगवानदास गोयनका २१)
,, ओमसिल्क ट्रेडिंग कम्पनी २१)
,, गोविन्द वस्त्रालय २१)
,, पवनकुमार मुरारका १६)
,, केदारनाथजी ११)
,, घनश्यामदासजी जमुनादासजी ११)
,, मूलचन्द्र गनपतलाल ११)
,, किशनलाल सुनार ११)

श्री बनारसीदास काशीप्रसाद जौहरी ११)
,, रामप्रवेश चौबे ११)
,, सुनीलकुमार सुशीलकुमार ११)
,, विश्वनाथप्रसाद ११)
,, रेणू साड़ी सेन्टर ११)
,, भगवानदास रामदास ११)
,, जगदीशप्रसाद दूबे, ११)
,, नन्दूराम ११)
,, रामरतन दम्मानी ११)
,, ऋषिकुमार एण्ड ब्रदर्स ११)
,, रेशमी साड़ी परिधान ११)
,, रामरतन दम्मानी ११)
,, श्रीराम एजेन्सी ११)
,, बजरंग साड़ी सेन्टर १०)
,, आनन्दकुमार १०)
,, मोतीलाल ५)
,, कैलाशनाथ साहू ५)
,, हरेकृष्णलाल ५)
,, कमलकुमार रतिलाल ५)
,, विक्रमादित्य सिंह ५)
,, नन्दकिशोर केशरी ५)
,, मानिकचन्द्र जमुनादास पारिख ५)
,, मनसुखदास वीरचन्द ५)
,, कला साड़ी हाउस ५)
,, रमाशंकर गुप्ता ५)
,, मोहनदास मुकुन्ददास ५)
,, रामजी मालवीय ५)
,, जयप्रकाश सिंह ५)
,, बलभद्रदास ५)
,, श्री जी कम्पनी ५)
,, जीवनदास ५)
,, रामसेवक जयचन्द्र धूत ५)
,, ठीके गैसवाला ५)
,, नारायणदास ४)
,, विष्णुदत्त शर्मा २)
,, मती ईश्वरीदेवी २)
,, श्रीराम २)
,, बनवारीलाल केडिया २)

| | |
|---|---|
| श्री नागरदास | २) |
| ,, विजय स्टोर्स | २) |
| ,, विजेन्द्र कुमार गौड़ | २) |
| ,, सरजू दीक्षित | २) |
| ,, रामचन्द्र | २) |
| श्रीमती जानकी | १)२५ |
| ,, रेखा | १)२५ |
| श्री रामेश्वरप्रसाद | १) |
| ,, विभूतिनारायण | १) |
| ,, मूलचन्द | १) |
| श्रीमती सीतादेवी | १) |
| ,, विमलादेवी | १) |
| श्री लक्ष्मणप्रसाद अग्रवाल | १) |
| फुटकर चन्दा | २)५५ |
| | ११७७)८३ |

**चन्दा मार्फत श्री वीरेन्द्रकुमारजी भुरारिया—**

| | |
|---|---|
| श्री दमड़ीशाह राकेशकुमार | २५१) |
| ,, बनारस वनस्पति कं. | २५१) |
| ,, मल्ल एण्ड संस | १६९)८५ |
| ,, शिवशंकर उमाशंकर | १०१) |
| ,, मेवा भण्डार | ५१) |
| ,, शीतला सुगर ट्रेडिंग | ५१) |
| ,, सेठ ब्रदर्स | ५१) |
| ,, कन्हैयालाल एण्ड संस | ३१) |
| ,, छन्नूलाल राजेशकुमार | ३१) |
| ,, राजेन्द्रनाथ बनारसीदास | २५) |
| ,, काशी सुगर ट्रेडिंग कं. | २१) |
| ,, पूचूराम रामजी | २१) |
| ,, लक्ष्मी ट्रेडिंग कम्पनी | २१) |
| ,, रामप्रसाद प्रेमचन्द | २१) |
| ,, रामनारायण एण्ड कम्पनी | २१) |
| ,, अशोक ट्रेडर्स | २१) |
| ,, सीताराम रामरूप | ११) |
| | ११४९)८५ |

**चन्दा मार्फत श्री भीखमचन्द्रजी मूदड़ा—**

| | |
|---|---|
| श्री शम्भूनाथ अजय कुमार | २७५) |
| ,, अभयराम चुन्नीलाल एण्ड कम्पनी | २५१) |
| ,, छेदीलाल हीरालाल | १०१) |
| ,, मुकुन्दलाल रामशंकर | १०१) |
| ,, चौथीराम चुन्नीलाल | १०१) |
| ,, अभयराम छन्नूलाल | १०१) |
| ,, बनवारी लाल अग्रवाल | ५१) |
| ,, हीरालाल रामदास | २५) |
| ,, सत्यनारायण गुप्ता | २१) |
| ,, अमरनाथ प्रसाद रघुनन्दन | २१) |
| ,, आत्माराम अशोक कुमार | १५) |
| ,, नन्दलाल राजनारायण | १५) |
| ,, सरजूप्रसाद जवालाप्रसाद | ११) |
| ,, गुलाबदास राधेश्याम | ११) |
| ,, प्रेमरतन श्रीलाल | ५) |
| ,, पन्नरराम जायसवाल | ५) |
| | १११०) |

**चन्दा मार्फत श्री गोवर्धनदासजी—**

| | |
|---|---|
| श्री भाऊराम जवाहरमल | ५१) |
| ,, लढा एण्ड कम्पनी | ५१) |
| ,, एम. जी. ब्रदर्स | ५१) |
| ,, दिलीपकुमार किरीटकुमार | ३१) |
| ,, प्रभुदास भगवानदास | ३१) |
| ,, मदनमोहन ब्रदर्स एण्ड कम्पनी | ३१) |
| ,, जीवनलाल खेतान | ३१) |
| ,, बदलूराम होरीलाल | ३१) |
| ,, मोतीलाल एण्ड कम्पनी | ३१) |
| ,, चम्पा लाल | ३१) |
| ,, भारत आटो स्टोर्स | ३१) |
| ,, द्वारकाप्रसाद जयकुमार | २५) |
| ,, अशोक जे. राम चन्दानी | २५) |
| ,, चुन्नीलाल कन्हैयालाल | २५) |
| ,, गोपालदास निरंकारनाथ | २५) |
| | ५०१) |

| नाम | राशि |
|---|---|
| श्री हरीमोहन गोपीमोहन | २५) |
| ,, तोताराम नारायण प्रसाद | २५) |
| ,, दूनीचन्द डेराशाह | २५) |
| ,, सहगल ब्रदर्स | २५) |
| ,, भगवानदास कानजी रोकड़िया | २५) |
| ,, संगम सिल्क हाउस | २५) |
| ,, नानकराम एण्ड सन्स | २५) |
| ,, रामचन्द्र आत्माराम | २५) |
| ,, रमेशकुमार केवलराम | २५) |
| ,, बाबूलाल किशनस्वरूप प्रसाद | २५) |
| ,, श्यामसुन्दर सिंहानिया | २५) |
| ,, नरेन्द्रकुमार परसराम | २५) |
| ,, राजेन्द्रकुमार मदनलाल | २५) |
| ,, सूरजप्रसादजी छाबड़ा | २५) |
| ,, ओमप्रकाश एण्ड ब्रदर्स | २५) |
| ,, मेहरा सन्स | २५) |
| ,, जयरामकुमार | २५) |
| ,, भूपेन्द्रकुमार | २५) |
| ,, अश्विनीकुमार | २५) |
| ,, गोवर्धनदास लक्ष्मीदास | २५) |
| ,, अजीत कुमार गोठी | २५) |
| ,, राजेश खन्ना | २१) |
| ,, केदारनाथ जायसवाल | २१) |
| ,, तोलाराम हरुमल | १५) |
| ,, लक्ष्मणदास बनारसीदास | ११) |
| ,, रामगोपाल सुदर्शनकुमार | ११) |
| ,, तोलाराम हरुमल | ११) |
| ,, कृष्ण बलदेवराज | ११) |
| ,, हरवंश सिंह एण्ड ब्रदर्स | ११) |
| ,, नन्दलाल राजेश कुमार | ११) |
| ,, हजारी लालजी शर्मा | ११) |
| ,, मितेश कुमार | ११) |
| ,, मथुरादास नारायणदास | ११) |
| ,, डुंगर सिंह गोवर्धनदास | ११) |
| ,, किरीटकुमार फतेह सिंह | ११) |
| ,, पंकजकुमार मूलराज ठक्कर | ११) |
| गुसदान | ६) |
| | १२२१) |

**चन्दा मार्फत श्री बाबूलालजी—**

| नाम | राशि |
|---|---|
| श्री सीतारामजी चौधरी | ११) |
| ,, शक्ति साड़ी केन्द्र | ११) |
| ,, मथुरा सिल्क हाउस | ११) |
| ,, बनारस सिल्क केन्द्र | ११) |
| ,, चेतमणि आभूषण भण्डार | १०) |
| ,, विश्राम तिवारी | ७) |
| ,, श्यामदास रामदास | ७) |
| ,, अग्रवाल आर्नामेंट हाउस | ७) |
| ,, मुरारीलाल | ७) |
| ,, महेन्द्रकुमार मंगललाल | ७) |
| ,, रामदास अग्रवाल | ७) |
| ,, तिवारी ब्रदर्स | ७) |
| ,, गुजरात जरी हाउस | ५) |
| ,, विशणनाथ जगन्नाथ | ५) |
| ,, छोटेलाल दलाल | ५) |
| ,, वकील साहब | ५) |
| ,, बसन्तलाल रस्तोगी | ५) |
| ,, रामजी प्रसाद | ५) |
| ,, शंकरलाल कसेरा | ५) |
| ,, सिराजुद्दीन कोटवा | ५) |
| ,, राम भण्डार | ५) |
| ,, ठाकुरदास प्रह्लाददास | ५) |
| ,, गिरीश भाई | ५) |
| ,, शंकर आभूषण भण्डार | ४) |
| ,, बाम्बे स्टेन लेस स्टील सेन्टर | ४) |
| ,, कोठारी सिल्क स्टोर | ४) |
| ,, भगवतीप्रसाद | ४) |
| ,, रसराज स्वीट हाउस | ४) |
| ,, सत्यनारायण मिष्ठान्न भण्डार | ४) |
| ,, संकठा ब्रदर्स | ४) |
| ,, केदारनाथ बसन्तलाल पाठक | ३) |
| ,, नारायण आभूषण भण्डार | ३) |
| ,, भोलानाथ कसेरा | ३) |
| ,, केशरीनारायण | ३) |
| ,, आनन्द आर्नामेंट हाउस | ३) |
| ,, कृष्णदास एण्ड सन्स | ३) |
| ,, पूजन बर्तन भण्डार | |

श्री अर्चना ३)
,, छेदीलाल गणेशदास ३)
,, शिवकुमार प्रसाद ३)
,, मोतीलाल मुन्नूलाल ३)
,, हरिहरनाथ ३)
,, महावीरप्रसाद रामसरनलाल ३)
,, शिव आर्नामेंट हाउस ३)
,, ललित एण्ड सन्स ३)
,, श्रीनाथ पाठक ३)
,, राधेश्याम ३)
,, नरेन्द्र प्रसाद ३)
,, छन्नूलाल ३)
,, शिवनाथ सिंह ३)
,, राजेन्द्र प्रसाद ३)
,, गोपालदास बर्तनवाले ३)
,, सालिगराम २)
,, कृष्णचन्द्र अग्रवाल २)
,, महादेवप्रसाद मुकुन्दलाल २)
,, प्यारेलाल कोठारी २)
,, राम अग्रवाल २)
,, प्रह्लाददास २)
,, नागरजी २)
,, जवाहरलाल २)
,, भानुप्रसाद २)
,, नरसिंहदास २)
,, वी. वी. इन्डस्ट्रीज २)
,, राजलक्ष्मी अलंकार मन्दिर २)
,, रामसरनलाल रामेश्वरप्रसाद २)
,, रघुनाथप्रसाद कसेरा २)
,, छन्नूलाल कसेरा २)
,, मारवाड़ी पापड़ भण्डार २)
,, कुमार फार्मेसी २)
,, जगन्नाथप्रसाद अनमोलकुमार २)
,, अजीज रफूगर १)
,, हीरालाल १)

२९०)

चन्दा गोला दीनानाथ से—

श्री श्रीराम ओंकारमल ५१)
,, रघुनाथ लक्ष्मीनारायण एण्ड कं. ५१)
,, राजपूत किराना मर्चेण्ट ३१)
,, राजस्थान कार्पोरेशन ३१)
,, अनिलकुमार अरुणकुमार ३१)
,, महादेवप्रसाद बसन्तलाल ३०)
,, विष्णु किराना भण्डार २१)
,, गुद्दू चाँदवाले ११)
,, विजय ११)
,, चिरंजीलाल जयप्रकाश ११)
,, लालजीप्रसाद शिवशंकरप्रसाद ११)
,, भोलानाथ अनिलकुमार ११)
,, सत्यनारायण प्रसादजी ११)
,, आसाम स्टोर्स ११)
,, महादेवप्रसाद रामजी केसरवानी ११)
,, घनश्यामदासजी ११)
,, प्रकाश केमिकल्स ११)
,, काशीदास मोहनदास ११)
,, रणछोड़दास केसरवानी ७)
,, पंजाबी किराना भण्डार ५)
,, राजाराम केसरवानी ५)
,, मुकुन्दलाल मदनलाल ५)
,, रामानन्द केसरवानी ५)
,, सत्ती किराना स्टोर्स ५)
,, बैजनाथप्रसाद कैलाशनाथ ५)
,, अमरनाथ चौधरी ५)
,, किशन नारायण ५)
,, पंचमराम भगेलूराम ५)
,, गंगाराम ५)
,, हरीदास केसरवानी ५)
,, मोतीलाल केसरवानी ५)
,, बाबूलाल जगन्नाथ ५)
,, अम्बे किराना स्टोर्स ५)
,, कुमार किराना कं. ५)
,, कैलाशनाथ कृष्णमुरारी ५)
,, मगनराम ओमप्रकाश ५)
,, शंकरलाल केसरवानी ५)

| | |
|---|---|
| श्री विष्णुप्रसाद केसरवानी | ५) |
| ,, रविप्रकाशजी | ५) |
| ,, रामजी जायसवाल | ५) |
| ,, सीताराम अरविंदकुमार | ५) |
| ,, दीनानाथ केसरवानी | ५) |
| ,, कन्हैयालाल पन्नालाल | ५) |
| ,, बचाऊलाल केसरवानी | ५) |
| ,, लालजी प्रसाद केसरवानी | ५) |
| ,, गोविन्द एण्ड कम्पनी | ५) |
| ,, बिन्द्रा किराना स्टोर्स | ५) |
| ,, नवीन किराना स्टोर्स | ५) |
| ,, बेचनराम रूपचन्द केसरवानी | ५) |
| ,, कल्याण | ५) |
| ,, गोवर्धनदास राजेन्द्रप्रसाद | ५) |
| ,, वाराणसी प्राविजन स्टोर्स | ५) |
| ,, बसन्त एण्ड कम्पनी | ५) |
| ,, काशीनाथ विजयकुमार | ५) |
| ,, रणजीत किराना कं. | ५) |
| ,, आत्माराम कैलाशनाथ | ५) |
| ,, अमरनाथ केसरवानी | ५) |
| ,, रामजियावन केसरवानी | ५) |
| ,, लक्ष्मीनारायण बरनवाल | ५) |
| ,, शिवप्रसादजी | २) |
| ,, विजयकुमार | २) |
| ,, नन्दलाल | २) |
| ,, सुरेशकुमार | २) |
| ,, जगदीशप्रसाद एण्ड सन्स | २) |
| ,, विजयकुमार | २) |
| ,, दी काशी किराना स्टोर्स | १) |
| | ५८७) |

कुलयोग—१८५०९)६८

**धर्मार्थ चन्दा—**

| | |
|---|---|
| श्रीमती केशर देवी गोयनका | २६१०) |
| श्री गणेश प्रसाद नन्दलाल | १२२०) |
| ,, दास फेडरेशन | ११००) |
| ,, रामेश्वरलाल नोपानी | १०६१) |
| ,, नोपानी जनसेवा निधि | ८०१) |
| ,, बैजनाथ प्रसाद | ७३१) |
| ,, युनाइटेड कमर्सियल बैंक | ७००) |
| ,, विजय खेतान | ५०१) |
| ,, डायमण्ड होजरी | ६००) |
| ,, रामादेवी चैरिटेबुल फण्ड | ५००) |
| ,, ताड़कनाथ दूबे | ४८०) |
| ,, अनिल ब्रदर्स | ४८०) |
| ,, केडिया कला केन्द्र | ४४०) |
| ,, श्यामलाल गुजराती | ३६०) |
| ,, शिवशंकर दवे | ३६०) |
| ,, अग्रवाल खाद्य भण्डार | ३५३) |
| मे. वैशाली-बम्बई | ३०३) |
| श्री मोहनलाल किशनदास | ३०२) |
| नेलीमरला जूट मिल | ३००) |
| श्री दीपककुमारजी | २८४) |
| ,, रतनलाल केशरवानी | २७०) |
| मे. उर्वशी | २५१) |
| मे. ज्ञानमण्डल लिमिटेड | २५१) |
| में. काशी कोल्ड स्टोरेज | २५१) |
| श्री राधेश्याम सराफ | २५१) |
| ,, एस. के. अग्रवाल | २२४) |
| ,, गोपालदास कृष्णदास | २०१) |
| ,, मुरारी लाल राजेन्द्र कुमार | १७८) |
| ,, सारनाथ कोल्ड स्टोरेज | १५१) |
| ,, रामेश्वरलाल जालान् | १५१) |
| गुप्तदान | १२१) |
| श्री छोंगामल रामकिशुन | १०१) |
| ,, रामनिरंजन केजरीवाल | १०१) |
| ,, राजकुमार जैन | १०१) |
| ,, गौरीशंकर पोद्दार | १०१) |
| मे. वैशाली अहमदाबाद | १०१) |
| ,, गौरीशंकर कृष्णलाल | १०१) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्री वृजरमनदास एण्ड सन्स | १०१) | श्री सन्तोषकुमार | ४०) |
| ,, भोलानाथ गुलाबचन्द्र | १०१) | ,, गोपीकृष्ण अग्रवाल | ४१) |
| ,, काशीनाथजी चौधरी | १०१) | ,, माहेश्वरी चाय | ३५) |
| ,, श्याममोहन अग्रवाल | १०१) | ,, गौरीशंकर कृष्णकान्त | ३१) |
| ,, टाटा टेक्सटाइल्स | १०१) | ,, नारायणप्रसाद जी | ३१) |
| ,, एग्रो डेयरी इण्डस्ट्रीज | १०१) | ,, राजेन्द्रनाथ पाण्डे | २५) |
| ,, रघुनाथप्रसाद श्यामसुन्दर | १०१) | ,, सागरमल जी बजाज | २५) |
| एस. सुमन कुमार सजनकुमार | १०१) | ,, भरत जी | २५) |
| प्रकाश ट्रेडर्स | १०१) | ,, मन्नूलाल काशीनाथ | २५) |
| श्री दीनानाथ झुनझुनवाला | १०१) | ,, बैजनाथदास | २५) |
| ,, रामलक्ष्मी नारायण | १०१) | ,, विश्वनाथप्रसाद जी बाजोरिया | २५) |
| ,, जेठमल बजाज | १०१) | ,, छुन्नूलालजी | २५) |
| ,, हनुमान प्रसादजी | १०१) | ,, गोपालदास बालकृष्णदास | २५) |
| मे. आर. नारायण एण्ड कं. | १००) | ,, हनुमानदास | २३) |
| श्रीमती परवती देवी | १००) | ,, महेशप्रसाद | २२) |
| श्री लक्ष्मीनारायणजी | १००) | श्रीमती रुक्मिणी देवी | २२) |
| ,, ऋषिकेशजी | ७३) | श्री पूरणमल पोद्दार | २२) |
| ,, चतुर्भुजजी शिवप्रसाद | ६२) | ,, रघुनाथप्रसाद बाजोरिया | २२) |
| ,, अशोक कुमार | ६०) | ,, घनराज राजगढ़िया | २२) |
| ,, किशनलाल ऋषिकेश | ६०) | ,, विजयकुमार भुवालका | २२) |
| ,, राजकृष्णदास रामकृष्णदास | ५४) | मे. रूपदर्शी | २२) |
| ,, हीरालाल गाड़ीवाले | ५१) | श्री रामनिवास बागला | २२) |
| ,, बिशनदास जगदीश कुमार | ५१) | ,, देवेन्द्रकुमारजी केडिया | २२) |
| श्रीमती लीलावेवी | ५१) | ,, रतनजी माहेश्वरी | २१) |
| श्री दुर्गा प्रसाद सरावगी | ५१) | ,, किशन जालान | २१) |
| ,, राजेन्द्रदास बनारसीदास | ५१) | ,, राज स्टोर्स | २१) |
| ,, रामजानकी दाल मिल | ५१) | ,, सुरुचि | २१) |
| ,, छन्नूलाल | ५१) | ,, बलदेवदास जमुनाप्रसाद | २१) |
| ,, शिवनाथ जौहरी | ५१) | ,, विश्वनाथप्रसाद कन्हैयालाल | २१) |
| ,, रामशरण सेठ | ५१) | ,, पुरुषोत्तमदास नागर | २१) |
| ,, रामकुमारजी | ५१) | ,, नन्दलालजी बाजोरिया | २१) |
| ,, नालन्दा एण्ड कम्पनी | ५१) | ,, शक्ति साड़ी इम्पोरियम | २१) |
| ,, काशीराम बनारसीलाल | ५१) | ,, केदारनाथ केजरीवाल | २१) |
| ,, भीमराज लक्ष्मीनारायण | ५१) | ,, शम्भूकृष्ण जी | २१) |
| ,, गोपीकृष्ण | ५०) | ,, काशीप्रसाद जी डिडवानिया | २१) |
| ,, गोविन्दरामजी सरावगी | ४४) | ,, राधेश्याम जी खेमका | २१) |
| ,, कमलेशचन्द्र | ४४) | ,, गोपाललाल शाह | २१) |
| ,, गोपालजी मुरारका | ४४) | ,, एस० डी० अग्रवाल | २०) |

| | |
|---|---|
| श्री के० एम० भट्ट | २०) |
| ,, नारायणजी | १५) |
| ,, किशनलाल जीतलाल | ११) |
| गुप्तदान | ११) |
| श्री लक्ष्मीनारायण सराफ | ११) |
| श्रीमती दुर्गादेवी | ११) |
| ,, सत्यभामा देवी भुवालका | ११) |
| श्री नागर ट्रेडिंग कम्पनी | ११) |
| ,, आत्माराम जी | ११) |
| ,, मुन्नूलाल जी | ११) |
| ,, मेहता वेल्डिंग वर्क्स | ११) |
| ,, गोवर्धनदास जी | ११) |
| ,, पुरुषोत्तमदास नरसिंहदास | ११) |
| ,, आत्मारामजी मुरारका | ११) |
| ,, गौरीशंकर सत्यनारायण | ११) |
| ,, रविकान्त जी | ११) |
| ,, गोपालदास परसोतमदास | १०) |
| ,, नवलकिशोर | १०) |
| ,, एस० जी० अग्रवाल | १०) |
| ,, विद्याधर तिवारी | १०) |
| ,, राजाराम | १०) |
| ,, राघवेन्द्र कृष्ण | ८) |
| ,, प्रकाशचन्द्र जी | ८) |
| ,, मुकुन्ददास जी | ५) |
| ,, दामोदरदास जी | ४) |
| ,, श्यामकुमार टण्डन | ४) |
| ,, इस्तहाक अहमद | ४) |
| श्री रामदास | २) |
| ,, पद्मनाभ तिवारी | २) |
| ,, मुनी अग्रवाल | २) |
| ,, अर्जुनलाल | २) |
| ,, शंकरलाल | २) |
| ,, रामगोपाल जोशी | २) |
| ,, रामधन मोतीलाल | २) |
| ,, रामजी यादव | १) |
| | २०३८०) |

**गोलक पेटी—**

| | |
|---|---|
| श्री रामजीवन भरतकुमार | ५०४) |
| ,, रूपश्री | ३४१) |
| ,, श्यामलाल कन्हैयालाल | २९९) |
| ,, गणेशप्रसाद नन्दलाल | २११) |
| ,, गोलघर धर्मशाला | ८४) |
| ,, जगदीशनारायण एन्ड संस | ७६)५० |
| ,, शान्ती स्टोर्स | ६८)२५ |
| ,, मानिकचन्द्र सर्राफ | ६६) |
| ,, मुरारीलाल केडिया | ५०) |
| ,, नारायण दास | ४५) |
| ,, गोवर्धनदास जी | ३१) |
| कानपुर धर्मशाला | २२) |
| श्री नरोत्तमदास | २१) |
| राधाकृष्ण धर्मशाला | १६) |
| खालसा एग्रो इन्डस्ट्रीज | १५)०५ |
| श्री विश्वनाथप्रसाद नन्दलाल | ११) |
| किशन धर्मशाला | ७)२१ |
| लच्छीराम धर्मशाला | ६)२५ |
| रेवाबाई धर्मशाला | ५)५० |
| सदर | ४)६५ |
| | १८८४)४१ |

**रोजगार आमदनी—**

| | |
|---|---|
| मे० आत्माराम अनन्तप्रसाद | ३६६४)३९ |
| ,, श्रीराम बृजेशकुमार | २०००) |
| ,, शिवनारायण शंभूनारायण | ९८९) |
| ,, किशनलाल रिषीकेश | ८५१) |
| ,, वाराणसी सुगर सप्लाई कं० | ५०३) |
| ,, दलसुखराय जयदयाल | ५०१) |
| ,, कालूराम गौरीशंकर | २०१)७३ |
| ,, गौरीशंकर कृष्णकान्त | १०६)४५ |
| ,, कोठारी सिल्क स्टोर्स | १०१) |
| ,, राजीव साड़ी सेंटर | १०१) |
| ,, श्रीरामजानकी दाल मिल | २३)७० |
| | ९०४२)२७ |

**विशेष सहायता—**

| | |
|---|---|
| मगनीराम रामकुमार बांगड़ चैरिटेबुल ट्रस्ट | ५०१) |
| मे० फोरजिंग इन्डिया, कलकत्ता | १०००) |
| श्री जे० दास बी० दास | ५००) |
| कोठारी चैरिटेबुल ट्रस्ट, कलकत्ता | २५०) |
| | २२५१) |

**गो-खुराकी—**

| | |
|---|---|
| श्री रामकुमार जी रूंगटा | १०१) |
| ,, दयाशंकर बाजपेई | ५०) |
| ,, पारिख ब्रदर्स | ११) |
| | १६२) |

**ट्यूबवेल बोरिंग वास्ते सहायता—**

| | |
|---|---|
| श्री जगमोहनदास साहू चैरिटेबुल ट्रस्ट | १२०००) |

**अनुदान—**

| | |
|---|---|
| वाराणसी नगर महापालिका | ३०००) |
| कृषि मण्डी समिति | (प्राप्त नहीं हो रहा है) |

**बावनबीघा भवननिर्माण में सहायता—**

| | |
|---|---|
| श्री रामकुमारजी रूंगटा | १३६००) |
| पशुपालन विभाग से सामान | ८०००) |
| | २१६००) |

**बावनबीघा वृक्षारोपण में प्राप्त सहायता**

| | |
|---|---|
| श्रीमती दुलारी देवी | १२५) |
| श्री पूरणमलजी सराफ | १०१) |
| ,, रामकुमारजी बजाज | १०१) |
| ,, रामलालजी | १०१) |
| ,, विश्वनाथजी केजरीवाल | १०१) |
| | ५२९) |

**बावनबीघा पम्प खरीद वास्ते सहायता**

| | |
|---|---|
| श्री रामकुमारजी सराफ | २०००) |

**चिकित्सालय हेतु सहायता**

| | |
|---|---|
| पशुपालन विभाग से सामान | १०००) |

**वस्तु-दाता**

| | |
|---|---|
| बिरला चैरिटी ट्रस्ट, कलकत्ता | विगत अनेक वर्षों से प्रतिदिन हरी घास। |
| पशु-पालन विभाग, उ. प्र. | ८००० रु. मूल्य की सीमेण्ट की चादरें तथा एंगल आयरन खटाल हेतु। |
| मे. प्रकाश ट्रेडर्स, वाराणसी | २ क्विंटल करकल ( पशु आहार ) |
| मे. अभयराम चुन्नीलाल | १ क्विंटल करकल ( ,, ) |

# पशुओं का विवरण

## संवत् २०३७-३८

### श्री काशी गोशाला

| गाय | बैल | साँड़ | बाछा | बाछी | भैंस | भैंसा | पाड़ा | पाड़ी | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | × | २ | २ | १ | १ | × | १ | × | १२ |

### श्री बावनबीघा गोशाला

| गाय | बैल | साँड़ | बाछा | बाछी | भैंस | भैंसा | पाड़ा | पाड़ी | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४ | ४ | ४ | ८ | १० | × | ४ | × | × | ४४ |

### श्री रामेश्वर गोशाला

| गाय | बैल | साँड़ | बाछा | बाछी | भैंस | भैंसा | पाड़ा | पाड़ी | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | × | × | ५ | × | × | × | × | × | १३ |

### कुल योग

| गाय | बैल | साँड़ | बाछा | बाछी | भैंस | भैंसा | पाड़ा | पाड़ी | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७ | ४ | ६ | १५ | ११ | १ | ४ | १ | × | ६९ |

## श्री काशी जीवदयाविस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी के पच्चीस वर्षों के शासक-मण्डल के पदाधिकारियों की नामावली

| संवत् | सभापति | उप-सभापति | प्रधानमन्त्री | उप-प्रधानमन्त्री | कोषाध्यक्ष |
|---|---|---|---|---|---|
| २०१२–१३ | श्री बनारसीलाल बूबना | श्री नन्दकिशोर प्रहलाद का | श्री छेदीलाल लिल्हा | श्री लक्ष्मीनारायण मार्नासहका | + |
| २०१३–१४ | श्री भीषमचन्द्र मूँदड़ा | " | " | " | + |
| २०१४–१५ | " | " | " | " | + |
| २०१५–१६ | " | " | " | " | + |
| २०१६–१७ | " | " | " | " | + |
| २०१७–१८ | " | श्री श्रीगोपाल जालान | श्री नन्दलाल जालान | श्री रतनलाल सुरेका | + |
| २०१८–१९ | " | " | " | " | + |
| २०१९–२० | " | " | " | " | + |
| २०२०–२१ | " | " | " | " | + |
| २०२१–२२ | " | " | " | " | + |
| २०२२–२३ | " | " | " | " | + |
| २०२३–२४ | " | " | " | श्री प्रयागनारायण झुनझुनवाला | ऋषिकेश सर्राफ |
| २०२४–२५ | " | " | " | " | " |
| २०२५–२६ | " | " | " | " | " |
| २०२६–२७ | श्री बाबूलाल ढांढनिया | " | " | श्री महावीरप्रसाद डिडवानिया | " |
| २०२७–२८ | " | " | " | " | " |
| २०२८–२९ | " | " | " | " | " |
| २०२९–३० | श्री काशीप्रसाद अग्रवाल | " | " | " | " |
| २०३०–३१ | " | " | " | " | " |
| २०३१–३२ | " | श्री ऋषिकेश सर्राफ | " | श्री नन्दकिशोर प्रहलादका | महावीर प्रसाद डिडवानिया |
| २०३२–३३ | " | " | श्री काशीनाथ चौधरी | " | |
| २०३३–३४ | " | " | " | " | " |
| २०३४–३५ | " | " | " | " | " |
| २०३५–३६ | " | " | " | " | " |
| २०३६–३७ | " | " | " | " | " |
| २०३७–३८ | " | " | " | " | " |

# गोशाला के गत १६ वर्षों के प्रबन्धकारिणी समिति के पदाधिकारियों की नामावली

| संवत् | सभापति | उपसभापति | प्रधान मन्त्री | उप-प्रधान मन्त्री | कृषि मन्त्री | कोषाध्यक्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २०२१–२२ | श्री ब्रजपालदास | श्री श्रीनिवास सरावगी<br>,, रतनलाल सुरेका<br>,, गिन्नीप्रसाद लड़िया | श्री घनश्यामदास | श्री राजकुमार लिल्हा | पारसनाथ चौबे | रामऔतार बूबना |
| २०२२–२३ | ,, | ,, | ,, | श्री दुर्गाप्रसाद खेतान | ,, | ,, |
| २०२३–२४ | ,, | श्री गोवर्धनदास<br>,, सत्येन्द्रकुमार गुप्त | ,, | ,, राजकुमार लिल्हा | ,, | ,,<br>,, |
| २०२४–२५ | ,, | ,, नंदकिशोर प्रह्लादका<br>,, ज्ञानदास | ,, | ,, | नन्दलाल अग्रवाल | लोकनाथ बूबना |
| २०२५–२६ | ,, | ,, नंदकिशोर प्रह्लादका<br>,, गोवर्धनदास | ,, | ,, | ,, | ,, |
| २०२६–२७ | ,, | ,, | ,,<br>श्री मोहनलाल केडिया | ,, | गोवर्धनलाल झँवर | ,, |
| २०२७–२८ | ,, | ,,<br>श्री रामप्रताप टीबड़ेवाल | ,, | | ,, | ,, |
| २०२८–२९ | ,, | ,, गोवर्धनदास | ,, | ,, | ,, | ,, |
| २०२९–३० | ,, | ,, काशीप्रसाद अग्रवाल<br>,, गोवर्धनदास जी | ,,<br>,, | ,,<br>,, | जानकीवल्लभ करवा<br>,, | ,,<br>,, |
| २०३०–३१ | ,, | ,, राजकुमार साह<br>,, श्याममोहन अग्रवाल | श्री मुरारीलाल केडिया | ,,<br>,, | प्रयागनारायण झुनझुनवाला | आत्माराम ढांढनिया |
| २०३१–३२ | ,, | ,, रामनिवास<br>,, भैरोप्रसाद अग्रवाल | ,, | श्री बद्रीप्रसाद ढांढनिया<br>,, राजकुमार लिल्हा | जानकीवल्लभ करवा | लोकनाथ बूबना<br>अशोककुमार सराफ |
| २०३२–३३ | ,, | ,, रामनिवास<br>,, इन्दरचंद बाजोरिया | श्री पुरुषोत्तमदास मोदी | ,, पुरुषोत्तमदास मोदी<br>,, अशोककुमार सराफ | ,,<br>,, | चाँदरतन चाँडक |
| २०३३–३४ | ,, | | | ,, प्रयागनारायण झुनझुनवाला | | इन्द्रचंद बाजोरिया |
| २०३४–३५ | ,, | ,, प्रह्लादनारायण झुनझुनवाला | ,, | | ,, | |
| २०३५–३६ | ,, | ,, गोवर्धनलाल झँवर<br>,, इन्दरचंद बाजोरिया<br>,, गोवर्धनलाल झँवर | ,, | ,, रामशरण सेठ | ,, | श्रीनारायणप्रसाद पसारी |
| २०३६–३७ | ,, | ,, | ,, | ,, बलदेव गुजराती | प्रयागनारा. झुनझुनवाला | ,, |
| २०३७–३८ | ,, | ,, | ,, | ,, | अशोककुमार शराफ | ,, |

## शासक-मंडल संवत् २०३७–३८

| | |
|---|---|
| श्रीमान् महाराजा बहादुर भू० पू० काशीनरेश श्री विभूतिनारायण सिंह देव | संरक्षक |
| श्री काशीप्रसाद अग्रवाल | सभापति |
| श्री ऋषीकेश सर्राफ | उप-सभापति |
| श्री काशीनाथ चौधरी | मन्त्री |
| श्री नन्दकिशोर प्रहलादका | उप-मन्त्री |
| श्री महावीरप्रसाद डिडवानिया | कोषाध्यक्ष |

### सदस्य

श्री रतनलाल सुरेका
श्री भीषमचन्द मूँदड़ा
श्री मुरारीलाल केडिया
श्री बृजमोहन केजरीवाल
श्री नन्दलाल जालान
श्री छेदीलाल लिल्हा
श्री कुञ्जबिहारी गुप्त
श्री आत्माराम ढाँढनिया
श्री प्रयागनारायण झुनझुनवाला

## प्रबन्धकारिणी समिति संवत् २०३७–३८

| | |
|---|---|
| श्री रामेश्वरलाल नोपानी | संरक्षक |
| श्री व्रजपालदास | सभापति |
| श्री इन्द्रचन्द बाजोरिया | उप-सभापति |
| श्री गोवर्धनलाल झँवर | उप-सभापति |
| श्री पुरुषोत्तमदास मोदी | प्रधानमन्त्री |
| श्री बलदेवदास गुजराती | उपमन्त्री |
| श्री अशोककुमार सराफ | कृषिमन्त्री |
| श्री नारायणप्रसाद पसारी | कोषाध्यक्ष |

### सदस्य

श्री रामशरण सेठ
श्री वीरेन्द्रकुमार भुरारिया
श्री सत्यनारायण टीबड़ेवाल
श्री लक्ष्मणदास अग्रवाल
श्री शंकरलाल नारसरिया
श्री राजकुमार लिल्हा
श्री अजितप्रसाद गोठी
श्री राधेश्याम खेमका
श्री श्रीराम माहेश्वरी
श्री राजकृष्णदास
श्री बृजमोहन मूँदड़ा
श्री जानकीवल्लभ करवा
श्री श्याममोहन अग्रवाल

आय-व्यय-निरीक्षक

श्री घनश्यामदास एण्ड कं०, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट
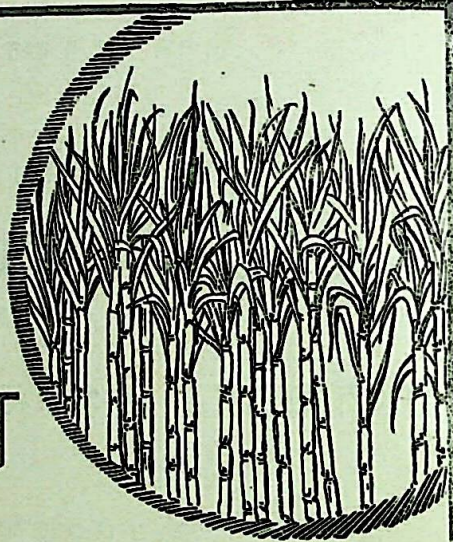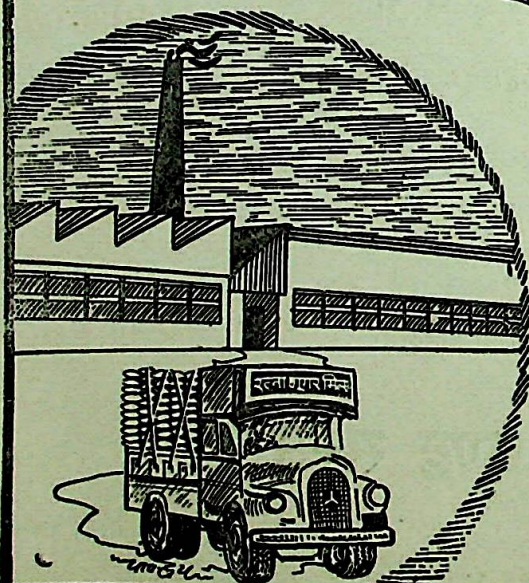
दी रत्ना शूगर मिल्स कं. लि.
शाहगंज, जौनपुर
हेड आफिस-
नेहरू मार्केट
टाऊनहाल
वाराणसी-१
फोन-३८०२